Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 20 अंक 07 30 जुलाई, 2020 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

चीन की साजिश व राष्ट्रीय सुरक्षा

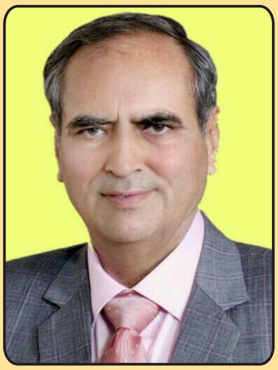

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

गलवान घाटी में चीन द्वारा भारत की पीठ में छुरा घोंपकर 15 जून को हुई 20 भारतीय सैनिकों की शहादत से पूरा देश गुस्से से उबल रहा है लेकिन भारत चीन विवाद 7 दशक से भी पुराना है और इस विवाद को चीन अपनी विस्तारवादी, छल–कपट तथा विश्वासघात आदि मुख्य नीतियों के सहारे सदैव दो कदम आगे व साथ ही एक कदम पीछे हटकर आगे बढ़ाता रहता है। चीन एक ऐसा देश जो मित्रता का केवल ढ़ोंग करता है और सदैव पीठ में छुरा घोंपता है। अतः इन तथ्यों को लेख में वर्णन किया जाना आवश्यक है।

विस्तारवादी नीति :– शुरू में चीन ने तिब्बत पर अपना दावा जताया था और फिर वहां से भागकर दलाईलामा ने धर्मशाला–मैकलोड़गंज (हिमाचल प्रदेश) में अपनी राजधानी बना ली और भारत ने तिब्बत को मान्यता दे दी। भारत व चीन के बीच तिब्बत, राजनीतिक व भौगोलिक तौर पर बफर का काम करता था। चीन ने 1950 में इसे हटा दिया। इस प्रकार छल–कपट द्वारा चीन भारत के पड़ोसी मित्र देशों – भुटान, नेपाल अक्साई चीन आदि को भड़काकर उनकी सीमाओं में अपना क्षेत्र बढ़ाता रहा। इसके अलावा चीन पूरे अरुणाचल पर अपना दावा जताता रहा है। वर्ष 1986 में प्रदेश के समुदरोंग चु पर घुसपैठ कर चुका है। अरुणाचल में एक जल–विद्युत परियोजना के लिए एशिया डेवलपमेंट बैंक से लोन लेने का चीन ने जम कर विरोध किया। अरुणाचल को विवादित बताने के लिए चीन वहां के निवासियों को स्टेपल वीजा देता है। चीन ब्रह्मपुत्र नदी पर कई बांध बना रहा है और उसका पानी वह नहरों के जरिये उत्तरी चीन के इलाकों में ले जाना चाहता है।

अब नेपाल भी चीन की शह पर भारत के खिलाफ कदम उठा रहा है। नेपाल अब तीव्र गति से भारतीय सीमा के साथ सुरक्षा चौकियां खड़ी कर रहा है। 3 जून को नेपाल के आर्मी चीफ जनरल पूर्ण चंद थापा ने सशस्त्र पुलिस बल के प्रमुख शैलेंद्र खनल के साथ कालापानी के नजदीक चंगरू में स्थापित एक नई पोस्ट का निरीक्षण किया। ऐसी भी सूचना है कि नेपाल ने चीनी शह पर 70 वर्ष में पहली बार कुछ ही दिनों में इन चौकियों पर असंख्य सैनिक तैनात कर बार्डर पर हेलीपैड व टैंट लगा दिए हैं। भारत जब चीन के साथ एल ए सी के साथ लगते गलवान घाटी, हॉट स्प्रिंग व पंगोगत्सो के विवाद में उलझा हुआ था तो चीन सेनाओं ने बदनियति से बार्डर पार उत्तर में पेदसाग पर्वतीय क्षेत्र तक घुसपैठ बढ़ा दी जो चीन की एल ए सी को पश्चिम की ओर से विवादित सीमा तक बढ़ाने की साजिश है। चीन ने महत्वपूर्ण हवाई पट्टी दौलत बेग ओलडी

से दक्षिण–पूर्व की ओर 30 कि0मी0 तक देपसांग मैदानों के बोटलनैक वाईजंक्सन स्थान तक अपनी सेनाओं की तैनाती बढ़ा दी है। संयुक्त राष्ट्र के स्टेट सचिव माईकल पोम्पीयो ने भी दावा किया है कि चीन भारत के साथ भ्रष्ट अभिनेता की तरह सीमा पर तनाव बढ़ा रहा है और उन्होने गत सप्ताह चीन के समक्ष यांग जेची के साथ इस मुद्दे को उठाया था। उन्होने यह भी माना कि हांगकांग, तिब्बत, शिनजियांग, भारत, फिलीपींस, मलेशिया आदि में चीन की साजिशें लगातार बढ़ रही हैं।

चीन ने पिछले कुछ वर्षों में हिंद महासागर में अपनी गतिविधियां काफी बढ़ा दी हैं। पाकिस्तान, म्यांमार व श्रीलंका के साथ साझेदारी में परियोजनाएं शुरू कर वह भारत को घेरने की रणनीति पर काम कर रहा है। पाक अधिकृत कश्मीर और गिलगित बालटिस्तान में चीनी गतिविधियां तेज हुई हैं। एक केंद्रीय मंत्री एवं पूर्व सेना प्रमुख ने खुद कहा कि इन इलाकों में तीन से चार हजार चीनी कार्यरत हैं, जिनमें पीएलए के लोग भी हैं। अपनी ऊर्जा की जरूरतों को ध्यान में रख चीन साउथ चाइना सी इलाके में अपना प्रभुत्व कायम करने की कोशिशें कर रहा है। यहां उसे वियतनाम, जापान और फिलीपींस से चुनौती मिल रही है। हाल में उसने वियतनाम की दो तेल ब्लॉक परियोजनाओं में शामिल भारतीय कंपनियों को चेतावनी दी की वह साऊथ चाइना सी से दूर रहें। और इन्हीं सब बातों को लेकर भारत और चीन का टकराव होता रहता है।

भुटान सीमा पर भी चीन बार–बार विवाद खड़ा करता रहता है।

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

चीन की सियासी नजर लंबे समय से सिनजियांग व तिब्बत बार्डर के साथ लगते जम्मु–काश्मीर के क्षेत्रों पर टिकी हुई हैं जो कि इन दोनों देशों को जोड़ती हैं और चीन पाकिस्तान की आड़ में इन क्षेत्रों का मुद्दा भारत पाकिस्तान के बीच उलझाए हुए है जबकि इसके पीछे चीन की साजिश काम कर रही है। इसके साथ ही पी एल ए उत्तरी लद्दाख विशेषकर दौलताबेग ओल्डी, चिप चैप रीवर, ट्रैक जंक्शन और काकरोन मार्ग आदि पर नजर जमाए हुए है।

भारत अकेला देश नहीं जिस पर चीन की नजरें टिकी है। कई अन्य देश भी उसकी विस्तारवादी नीति की वजह से परेशान हैं। चीन ने 1979 में वियतनाम में विनाशकारी आक्रमण वर्ष 1975 में सिक्किम में अवैध घुसपैठ व वर्ष 2017 में डोकलाम में भी घुसपैठ की नापाक हरकते कर चुका है। मंगोलिया, अक्साई चीन, शिनजियांग, साउथ चाईना सी, ईस्ट चाईना सी व वियतनाम, ब्रुनेई, ताईवान, फिलिपिंस सभी जगह में आगे बढ़ने की कोशिश में है और अब पूर्वी लद्दाख में घुसपैठ की नापाक कोशिश कर रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत को स्पष्ट किया कि चीन का उसकी विस्तारवादी व गलत नीतियों के कारण विश्व के रूस, कजाकिस्तान, किरगिस्तान, तजाकिस्तान, नेपाल, थाईलैंड, कंबोडिया, सिंगापुर, ताईवान आदि 21 देशों के साथ विवाद चल रहा है। चीन की कुल चौदह देशों के साथ सीमाएं लगती हैं और करीबन हर देश के साथ उसका विवाद चल रहा है। इसी प्रकार चीन ने नेपाल के राजा ओली को बहकाकर अपने प्रभाव में कर लिया और नेपाल के अनेकों क्षेत्रों में अवैध कब्जा करने के लिए पैठ मार्ग बना कर घुसपैठ कर रहा है। नेपाल के गोरखा जिले के रूई गांव पर तो चीन ने पूर्णतया कब्जा कर लिया है और यहां के निवासी अपनी पहचान के लिए चिंतित हैं। सीमा के साथ लगते नेपाल के चार जिलों की 36 हैक्टयर भूमि पर चीन ने कब्जा कर लिया है। भारत पंचशील के स्वर्णिम स्वप्न में खोकर जब हिंदी–चीनी भाई–भाई के नारे में खोया हुआ था, तभी 1962 की लड़ाई चीन द्वारा विश्वासघात के रूप में भारत को प्राप्त हुई। पहला आघात था जब चीन ने भारत की पीठ पर वार किया था।

चीन द्वारा ऐसा ही एक टकराव 1967 में किया गया था और भारत की 2 ग्रेनेडियर्स बटालियन के जिम्मे नाथू–ला की सुरक्षा जिम्मेदारी थी। नाथु–ला दर्रे पर सैन्य गश्त के दौरान दोनों देशों के सैनिकों के बीच अक्सर धक्का–मुक्की होती रहती थी। 11 सितंबर 1967 को धक्का–मुक्की की एक घटना का संज्ञान लेते हुए नाथू–ला से सेबुला के बीच में तार बिछाने का फैसला लिया था। कुछ देर बाद चीनियों ने मेडियम मशीन गनों से गोलियां बरसानी शुरु कर दीं। 10 मिनट में 70 सैनिक शहादत को प्राप्त हो गए थे। इसके बाद भारत की ओर से जो जवाबी हमला हुआ,उसमें चीन का इरादा चकनाचूर हो गया था। कई चीनी बंकर ध्वस्त हो गए और खुद चीनी आकलन के अनुसार भारतीय सेना के हाथों उनके 400 से ज्यादा जवान मारे गए। भारत की ओर से लगातार तीन दिनों तक दिन रात फायरिंग जारी रही। चीन की मशीनगन यूनिट को पूरी तरह तबाह कर दिया गया था। इसके बाद 1987 में भी हमारी सेना ने चीन को अच्छा सबक सिखाया था। लद्दाख इलाके में सड़क बना कर चीन ने विवाद का एक और मसला खड़ा किया है। चीन जम्मू–कश्मीर को भारत का अंग मानने में आनाकानी करता है, लेकिन पाक के कब्जे वाले कश्मीर को पाकिस्तान का भाग मानने में उसे कोई आपत्ति नहीं है। दोनों देशों के बीच करीब 3000 किमी की सीमा पर कोई स्पष्टता नहीं है। चीन जान–बूझ कर सीमा विवाद हल नहीं करना चाहता। वह सीमा विवाद को समय–समय पर भारत पर दबाव बनाने के लिए उपयोग करता है।

भारत और चीन के बीच की वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) यानी 1962 की लड़ाई के बाद की वास्तविक स्थिति पर भी चीन शुरू से ही आगे बढ़ने की साजिश कर रहा है। एल०ए०सी० की निशानदेही भारत–चीन द्वारा 1960 में निर्धारित की गई थी और उस समय भी चीन द्वारा 5100 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र पर अपना दावा जताया गया था। भारत इस पर कई बार पुनः निशानदेही की मांग कर चुका है। चीन 1960 की क्लेम लाईन अनुसार एल०ए०सी० पर अवैध कब्जा बढ़ाने के लिए भरतीय सैनिकों की पैट्रोलिंग रोक के लिए पंयोग त्सो में फिंगर–4 नार्थ गलवान घाटी में पैट्रोलिंग प्वाइंट–14 रोकने, हाट स्प्रिंग क्षेत्र गोगरा में निर्माण कार्य, देपसंग में नये राडार व टैंक आदि स्थापित कर मनमानी हरकते कर रहा है।

अब गलवान घाटी में फिर से चीन ने वर्ष 1996 व 2005 के एल०ए०सी० क्षेत्र में हथियार व गोली बारूद इस्तेमाल ना करने के समझोतों की अवहेलना कर निहत्थे सैनिकों पर घातक व जानलेवा हथियारों से हमला कर अपनी बर्बरतापूर्ण अमानवीय साजिस द्वारा विश्वास की पीठ में छूरा घोंपा है। गलवान में यह शुरुआत अप्रैल के तीसरे हफ्ते में हुई थी जब लद्दाख बॉर्डर यानी लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल पर चीन की तरफ़ सैनिक टुकड़ियों और भारी ट्रकों की संख्या में इज़ाफ़ा दिखा था। इसके बाद से मई महीने में सीमा पर चीनी सैनिकों की गतिविधियां रिपोर्ट की गई हैं, चीनी सैनिकों को लद्दाख में सीमा का निर्धारण करने वाली झील में भी गश्त करते देखे जाने की बातें सामने आई थीं। इसके चलते कुछ दिनों पहले सेनाध्यक्ष जनरल नरावणे ने सीमा का दौरा किया था इसलिए सही तैयारियों के चलते स्थिति बहुत खराब होने से पहले संभल गई थी। लेखक मेजर के तौर पर वर्ष 1968–70 तक चीन की सीमाओं पर अपनी सेवायें दे चुका है। इस क्षेत्र में चीन व भारतीय सेना के बीच धक्का मुक्की व पथराव की घटनायें तो पहले भी होती रही हैं लेकिन बटालियन के सीईओ सहित 2 दर्जन से अधिक जांबाज सैनिकों का निहत्थे शहीद होना देश की सुरक्षा के लिये बेहद गंभीर व विचारणीय मामला है जोकि चीन की घटिया व नीच सोच को दर्शाता है और यही मौका है जब हम अपनी कमियों को दूर करें ताकि फिर से चीन ये हिमाकत करे तो उसका और ज्यादा माकूल जवाब दिया जा सके।

छल–कपटः– इतिहास गवाह है कि जब भी चीन के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाया गया तो उसने उसी समय भारत की पीठ में छूरा घोंपने का काम किया है। वर्ष 1960 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू ने चीन के साथ मित्रता करके हिंदी–चीनी भाई–भाई का नारा दिया तो चीन ने 1962 में युद्ध किया, जिससे पं० जवाहरलाल नेहरू को हार्ट अटैक हो गया। वर्ष 2018 में वर्तमान सरकार द्वारा अहमदाबाद में चीनी राष्ट्रपति का सत्कार किया गया तो चीन ने यह खूनी संघर्ष किया। भारत अब भी चीन के साथ मित्रता का हाथ बढ़ाए हुए है। वर्ष 2018 में और उसके बाद कोई दस दिन पहले भारतीय रिर्जव बैंक के गवर्नर द्वारा चीनी राष्ट्रपति को खुश करने के लिए बैंक आफ चाईना के नाम से दो चाईनीज बैंक खोलने के लाइसैंस जारी किए गए। इसी प्रकार वर्ष 2018 में चीनी राष्ट्रपति को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम में एक विशेष कार्यक्रम में आंमत्रित किया गया और उनको खुश करने के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गठित की गई दो मांउटेरियन स्ट्राइकिंग फोर्स के प्रोजैक्ट को रद्द किया गया जो राष्ट्र की सुरक्षा को क्षति पहुंचा सकता है।

स्टैच्यु ऑफ यूनिटी के नाम से सरदार बल्लभ भाई पटेल की जो प्रतिमा अहमदाबाद में स्थापित की गई उसकी 2989 करोड़ रूपये की लागत का भुगतान भी चीनी कंपनी को किया गया। इसके इलावा टिक–टॉक, पबजी, हैलो, लाइक, सैरियत बिगो आदि अनेकों मुख्य चीनी एप्स भारतीय चैनलों व कंपनियों द्वारा अपनाए जा रहे हैं जो कि राष्ट्र की सुरक्षा संबंधी जानकारी लीक करते हैं और इनके ब्रांड एंबेसडर हमारे उच्च कोटि के नेता, अभिनेता व प्रभावशाली व्यक्ति है जो इन ऐप का पैसे के लालच में अनाप–शनाप प्रचार करते हैं, जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा को गंभीर खतरा है।

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

सरकार ने अब जो चीन के 59 ऐप पर प्रतिबंध लगाया है वह सराहनीय है लेकिन इससे भी आगे बढकर चीन को हर मोर्चे पर पीछे धकेलने की जरूरत है।

वर्ष 2013 में भारतीय सेना के उच्च कोटि के अधिकारियों तथा सुरक्षा विशेषज्ञों ने भारत की सीमा सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिये लेह से लेकर नीचे उत्तराखंड तक आधुनिक तकनीक एवं हथियारों से लैस हथियारबंद असॉल्ट हैलिकाप्टर तथा उच्च कोटी के सर्विलांस सिस्टम सहित दो मांऊटेरियन स्ट्राईकिंग फोर्स खड़ी करने का सुझाव दिया था। उस समय इस प्रोजेक्ट की लागत 76 हजार करोड़ रुपये थी। वर्ष 2016 में यह अनुमोदन व स्वीकृति के लिये रक्षा विभाग से वित्त विभाग को भेज दी गई और वर्ष 2018 में इस प्लान को तत्कालीन रक्षा मंत्री स्व० अरूण जेटली के समय रिजेक्ट कर दिया गया जबकि उस समय सेना का वार्षिक बजट 3 लाख 5 हजार करोड़ का था। जिससे थोड़े खर्च से ही इसको पूरा किया जा सकता था। यदि उस समय यह स्ट्राईकिंग फोर्स बन गई होती तो आज इस तरह के हालात शायद न देखने पड़ते।

सन 2003 में तत्कालीन प्रधान मंत्री स्व0 अटल बिहारी वाजपेयी व चीनी प्रीमीयर बेन जियाबाओ के बीच दोनों देशों के आपसी संबंधों व रचनात्मक सहयोग पर सन्धि बनाकर चीन पर भरोसा जताया था जिसका चीन ने नाजायज लाभ उठाया। केंद्रीय सरकार द्वारा चीनी नागरिकों के लिए इलैक्ट्रोनिक टुरिस्ट वीजा भी जारी किया गया। नतीजन आज चीन का भारत के साथ 60 मिलीयन डॉलर का वार्षिक व्यापार चल रहा है जो कि भारत के वार्षिक सुरक्षा खर्च के बराबर है और भारत, चीन का 12वां सबसे अधिक व्यापारिक हिस्सेदार है।

चीन आज विश्व का दूसरा सर्वाधिक शक्तिशाली सत्ता माना जाता है जिसका राजनीतिक व व्यापारिक तंत्र अधिकांश देशों में फैला हुआ है। अतः बहुत कम राष्ट्र ही भारत–चीन के विवाद में हस्तक्षेप कर सकेगें और इस अवस्था में भारत को अन्य राष्ट्रों से मदद का जनमत इकट्ठा करने तथा संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अपना दबदबा बनाने की नीति अपनानी चाहिए। इसके साथ ही चीनी उत्पाद का बहिष्कार करके चीन की व्यवस्था पर आपसी सहयोग से आर्थिक हथौड़ा मारकर चीन की नापाक साजिश को कमजोर किया जा सकता है। पिछले कुछ सालों से रूस व चीन दोनों भारत के संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ बढते संबंधों से बडबड़ा रहे हैं और रूस द्वारा चीन विवाद के संबंध में भारत की मदद के लिए किए जाने वाले निर्णय से राजधानी दिल्ली व मास्को के आपसी संबंधों पर काफी प्रभाव पड़ सकता है। इसके साथ ही अधिकांश राष्ट्र बीजिंग की निरंकुश राजनीति, आर्थिक व सैन्य दबाव के आगे नतमस्तक हैं। अतः भारत का चीन की विस्तारवादी नीति के खिलाफ दृढ़ प्रतिरोध ही ऐशियाई देशों में एक नई भू–राजनैतिक क्रांति ला सकता है।

सुझावः– चीन के खिलाफ सख्त कार्रवाई की रणनीति बनाने की जरूरत है ताकि चीन के हर कदम का उसी के तरीके से जवाब दिया जा सके। इसके अलावा कोरेना को लेकर पहले ही चीन को पूरी दुनिया जलील कर रही है। भारत भी चीन के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय गठबंधन बनाने की ओर काम करे। कब्जा करना चाईना की मुख्य पॉलिसी है। चाहे वो जमीन पर हो या समुद्र में, ऐसे में इस तनाव जैसे माहौल में भारत के पास एक और मुख्य विकल्प ये है कि इंडियन नेवी समुद्र में चीन की घेराबंदी करे, ऐसे में दबाव से चीन समझौते के लिए मजबूर होगा। चीन को आर्थिक रूप से भी तोडने की जरूरत है। भारतीय लोग भारतीय उत्पादों को प्राथमिकता दें और सरकार भी भारतीय उत्पाद बनाने वालों को प्रोत्साहित करे। जब तक बाजार में प्रतिस्पर्धा नहीं होगी तब तक गुणवता वाले उत्पाद नहीं उतारे जा सकते हैं। भारत जैसे बड़े बाजार की अहमियत चीन अच्छी तरह जानता है। चीन को सीधा–सीधा यह बताए जाने की जरूरत है कि विवाद और व्यापार दोनों साथ नहीं चल सकते हैं। इसके साथ–साथ सक्रिय राजनीतिक दलों को राष्ट्र की सुरक्षा एवं विदेश नीतियों में हस्तक्षेप करने से गुरेज करना चाहिए।

नियंत्रण रेखा (एल ए सी) के मुददे को स्थायी तौर से रेखांकित किया जाना चाहिए। दक्षिण–पूर्वी (ए एस ई ए एन) एशियाई राष्ट्र संगठन के सदस्य नेताओं के अनुसार राष्ट्रों के प्रादेशिक व अन्य जमीनी सीमा विवादों को संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून सन्धि (यू एन सी एल ओ एस) के प्रावधानों के अनुसार निपटाया जाना चाहिए। इस संबंध में वर्ष 2016 में फिलीपींस द्वारा चीन के विरूद्ध (यू एन सी एल ओ एस) के तहत दायर सीमा विवाद में इंटरनैशनल कोर्ट ऑफ आर्बिट्रीशन द्वारा क्लीयर निर्देश जारी किए जा चुके हैं।

भारत के पास चीन की सेनाओं का मुंह तोड़ जबाब देने के लिए मजबूत सैन्य क्षमता है। चीन द्वारा लगातार की जा रही साजिस व विश्वासघात से भारत को पाकिस्तान से भी और अधिक सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि पाकिस्तान चीन की शह पर कोई भी नापाक हरकत कर सकता है इसलिए भारत को चीन व पाकिस्तान दोनों देशों से एक साथ युद्ध के लिए तैयार रहना होगा। भारत आज दोनों शत्रुओं से अलग–2 तो मुकाबला कर सकता है लेकिन दोनों के खिलाफ सीमाओं पर एकसाथ टक्कर लेने के लिए सैन्य तंत्र को आधुनिक तकनीक से लैस कर ओर सुदृढ़ बनाना होगा। इसके इलावा बार्डर के साथ अधिक मजबूती से सुरक्षा व्यवस्था कायम करने के लिए राजनैतिक सत्ता द्वारा चीन के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना होगा और चीन के घातक ढांचे का मुकाबला करने के लिए राष्ट्र को सैनिकों, नाविकों व ऐयरमैन का मनोबल कायम रखने के लिए एकजुट होकर साथ देना होगा। उत्तरी लद्दाख में नार्दन बार्डरों पर आई टी बी पी सुरक्षा बलों को संगठित व मजबूत पोस्ट स्थापित कर सुरक्षा प्रबंधों को अधिक सुदृढ़ बनाना होगा और किसी भी प्रकार के खतरे की जानकारी उपलब्ध कराने व समय पर आवश्यक कार्यवाही करने हेतू वास्तविक समयबद्ध, उच्च सर्विसलांस उपकरण और सैटैलाईट इमरजैंसी सीमा बार्डर पर उपलब्ध करवाए जाने आवश्यक हैं। सीमा सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने के लिए वर्ष 2013 में सुरक्षा विशेषज्ञों द्वारा सुझाई गई दो मांउटेरियन स्ट्रेकिंग फोर्स को बार्डर के साथ स्थापित किया जाना चाहिए। चीन की कुट नीति को ध्वस्त करने के लिए हमें तहवान और ईरान के साथ अपने पारस्परिक एवं व्यापारिक संबंध सुदृढ़ बनाने चाहिए। इसी प्रकारपूर्वी सीमाओं पर 5 जी एवं 6 जी तकनीक का विकास करना चाहिए।

आज विश्व का हर संवेदनशील राष्ट्र चीन से उसकी नापाक साजिश व अमानवीय हरकतों से नाराज है। कोरोना महामारी के संकट के दौर में भारतवर्ष की विश्व में विशेष पहचान बनी हुई है जबकि चीन की महामारी फैलाने में घटिया साजिश उजागर हो रही है इसलिए भारत–चीन विवाद में भारत को विश्वव्यापी सहयोग व हमदर्दी मिल सकती है। सशस्त्र सेनाओं का हौंसला बनाए रखने व राष्ट्र के नागरिकों की भावना का सम्मान करते हुए चीन की लंबे समय से चल रही नापाक हरकतों का मुंहतोड़ जबाब देना समय की जरूरत है।

डॉ0 महेंद्र सिंह मलिक
आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति एवं
जाट सभा, चंडीगढ व पंचकुला

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। – ससो

Bringing Solar Revolution In India (Haryana)

- R. N. Malik

It is exciting to learn that Prime Minister Shri Narender Modi inaugurated the 750 MW solar power plant set up in District Rewa of Madhya Pradesh. By far it is the largest power plant in Asia. The investment in the plant is Rs. 4300 crore and it occupies a land area of 3000 acres. The power generation capacity of 750 MW solar power plant is equal to the capacity of125 MW thermal power plant that will consume 2000 ton=mts of coal daily. Therefore the operation of this plant will save 7.30 lakh ton=mts of coal annually and save the environment from polluting gases, coal dust , Co2 emissions and the acid rain. The Prime Minister was very right when he said that solar energy is PURE,SURE,CURE and SECURE.

Nature has been very bounteous in blessing India with inexhaustible source of solar energy. There are 300 clear sky days in a year. Intensity of solar radiation (7W per square, meter) is maximum (in the world) in Barmer and Jaisalmer districts of Rajasthan. These days we look at the solar energy through the prism of Power Generation only and forget about two equally beneficial aspects .i.e solar water heating and solar cooking.

a) Solar Water Heating: The campaign for installing solar water heaters on rooftops was at a high pitch during 1980s. But this wonderful campaign was abandoned both by the central and state governments for unknown reasons . A solar water of 100ltr capacity costing Rs. 14000 saves 8 units of electricity per family per day during 5 months of winter. If every house installs a solar water heater in the tricity of Chandigarh, Panchkula and Mohali, the electricity saved is equal to the power generated by a 200 MW thermal power plant per day. Solar water heaters can also be used economically for generating steam, softening of water , pasteurization of milk and distillation of brackish water for drinking purposes.

b) Solar Cooking: Solar cooker is a wonderful device to use solar energy for cooking of rice,pulses and vegetables. A box type solar cooker of size 6ft by 4ft was able to cook 12.5kg of rice in 2.5 hours between 11a.m.to 1.30pm on 9thFebruary. Solar cooking devices were developed both for individual and community kitchens.The popularity of these cookers was at its peak during 1980s. But both the central and state governments don't mention about these cookers any more for unknown reasons. However community cookers are still used by NGOs, Gurudwara Langars and other religious organizations. The famous giant community solar cooker is used at Brahamkumari Asharam in Mount Abu (Rajasthan) to prepare food for 1000 persons daily. Unfortunately both the central and state governments made no effort to replicate this model for cooking food in the messes of three wings of armed forces, hostels, police lines to save huge amount of cooking gas. The quality of rice,pulses and puddings cooked by a solar cooker is much better than the food cooked at Gas Chulahs because of prevention of denaturing of proteins.

c) Power Generation: Electricity is generated by exposing specially manufactured silica cells to sunlight. This technology is based on the phenomenon of photo-electric effect of solar light as discovered by Professor Einstein. He got Nobel Prize in 1920 for making this discovery. Earlier the government could not go ahead to develop solar power plants on a mass scale because of the high cost of solar panels consisting of silica or PV Cells. But with the passage of time the cost of solar panels has come down substantially because of mass production of these cells. As a result the cost of generating one unit of power (KiloWatt- Hour) has come down to Rs. three which is less than the power generated from thermal or hydro power stations.

The electricity is generated from solar cells in two modes.i.e.by setting up solar farms and by installing roof top solar panels.

1) Electricity from Solar Farms : One MW of Solar Power Plant generates 4000 units whereas 1MW Thermal Power plant generates 24000 units per day. This is because of the variation of intensity of Solar Radiations with time and season. Also 1MW of solar power plant requires an area of 4 acres of land to generate 4000 units per day. Large number of solar power plants of capacity upto 300MW have been installed in Rajasthan, MP , Maharashtra and Tamil Nadu. The Rewa 750 MW solar power plant is the largest in Asia. Presently the combined installed capacity of solar power plants is 45000 MW (equivalent of 7500 MW of thermal power).The target set by the Prime Minister to enhance solar power capacity upto 1.0lakh MW by 2022 is within reach as the time of construction of a 1000 MW solar power plant is only 2 years.Since the land requirement is quite high,the cheap land available in Thar desert of Rajasthan provides the ideal place for large size solar power plants.

2) Electric Power from Rooftop Solar Panels: Rooftop in residential areas provide the ideal location for setting up solar panels to generate sufficient electricity to meet domestic requirements . A solar panel of 5KW capacity

can be easily installed to run all electrical appliances including one air conditioner. Large capacity panels can be installed at the roof tops in institutional and commercial buildings. For example Manav Rachna University Faridabad has a solar power plant of 300KW capacity generating 36000 unit of power per month. These panels are connected to the electric lines passing through the streets with the arrangement of net metering. The number of units generated by the plant are subtracted from the monthly bills of the house owners. In other words, the house owner is able to sell power from his rooftop solar panel to the state power utility (DHBVN Haryana) at Rs. 6 per unit. Cost of installing solar power panel comes to Rs. 45000 per kilowatt and the payback period is only five years. One great advantage of this system is that the transmission loss is zero. Fortunately installation of rooftop panels has become more popular in villages (because of irregular power supply) than in urban areas.There are 9 crore houses in urban centers in India who can easily install a solar power panel of 4KWcapacity each. Therefore the total power generated would be equal to the tune of 3.6lakh MW of solar power or 60000 MW of thermal power. The saving in power by installing solar panels on rooftops of commercial buildings will be equal to 1.2 lakh MW of solar power or 20,000 MW of Thermal Power. The additional saving of 1.2lakh MW of solar power or 20,000 MW of Thermal power will come from installation of solar water heaters and solar cookers. The total savings under three heads will be equal 6.0lakh MW of solar power or 1.0 lakh MW of thermal power.

Bringing Solar Revolution: Since the time of construction of large solar farms is 3 years both the central and state governments can develop 6o solar farms or ultra mega power plants each of 5000 MW capacity within three years. Likewise both the governments can pass an Act for compulsory installation of rooftop solar panels and solar water heaters in all the urban areas of India within two years. Likewise use of solar cookers can be introduced mandatorily in all the community kitchen as they do in Israel. Projects of distillation of brackish water for drinking purpose can also be launched on a massive scale. Such an extensive use of Solar Energy within a period of three years is no less than an energy revolution ever achieved in the world so far.

Solar revolution is accompanied by four more revolutions simulataneously

i) Economic revolution

ii) Environmental revolution

iii) Industrial revolution

iv) Transport revolution

Economic Revolution: Solar revolution bring the economic revolution because Rs. 36lakh crore will come into the market within three years for installing rooftop solar panels, water heaters and solar cookers to cover all the urban areas. Another amount of Rs. 18 lakh crore will flow into the financial market for setting up solar farms. An inflow of Rs. 54 lakh crore will make the economy buoyant and push away the recession.Another feature of this money flow is that Rs. 36 lakh crore will be contributed by the individuals

Environmental Revolution: Development of Solar Power equivalent to 1.5lac MW capacity of thermal plants will prevent daily burning of 22.5 lakh ton=mts of coal daily. This single step will save the environment from huge amount of emissionsS of polluting gases, greenhouse gases, coal dust,acid rain and disposal of fly ash.

Industrial Revolution: A large number of factories will be required to manufacture crores of Make in India solar panels, solar water heaters and solar cookers. This process will generate employment to large number skilled and semi skilled youths. The distribution and installation of solar devices will be second phase of employment generation .

Transport Revolution in Indian Railways: 80% of the freight load carried by goods train consists of transporting coal form coal mines to faraway thermal power plants. Once the thermal power plants are replaced by solar power plants then 22.5 lakh ton=mts of coal will not be required to carry by goods train daily.This will enable the railway tracks to run more passenger trains and improve the track efficiency.

All these interminable benefits of solar energy development will take India to become Atamnirbhar Bharat within two years. Haryana Government passed a notification that every buildingwith a plot size of 450 square meters will have to install rooftop solar power plant with a capacity equal 5 percent of the applied electric load, subject to a minimum capacity of one kilowatt. Unfortunately this directive of the state government was never implemented. Therefore the government of India will have to step in to directions to state governments to setup rooftop solar power panels of 4KW capacity per house and 10percent of the applied power load incase of commercial and institutional buildings along with installation of solar water heaters and solar cookers in community kitchens across all the urban areas in order to bring about the desired solar revolution in India and make her Atamnirbhar.

लाठी भी टूट गई और साँप भी नहीं मरा?

– डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

भारतीय सवर्ण हिंदू समाज सदैव, से ही न जाने क्यों प्रतिक्रियावादी ही रहा है। हालांकि उसका एक बहुत ही छोटा–सा भाग प्रगतिशील भी रहा ही हे। तभी तो इस समाज में बहुत कुछ बदलाव भी आये हैं। लेकिन बहुसंख्यक भारतीय भद्र–वर्ग आज भी प्रतिक्रिया होने पर ही आंदोलित होता है। वरना तो वह किसी पर्वतीय गिरिगुहा–गह्वर में निस्पद पड़े हुए अजगर की भाँति चिर–निंद्रा में मदमस्त ही पड़ा रहता है। या फिर संकट के समय कच्छप–धर्म अपनाकर वह धर्म या जाति अथवा वर्तमान में राष्ट्रवाद के खोल में ही सिमटकर बैठ जाता है।

इस प्रकार से आत्ममुग्ध होकर भले ही वह स्वयं को इस आधार पर परम सहनशील और संकोचशील अथवा आत्मकेन्द्रित समाज भी कह सकता है। क्योंकि उसने आध्यात्मिकता का जो आवरण अनवरत भाव से सदियों तक अबाध रूप से ओढे रखा है। उसने गतिहीनता को या जड़ता को ही तो अपनी चिरजीवंतता या शाश्वतता ही बखाना है। कर्महीनता एवं आलस्य और परम प्रमाद के प्याले को ही अनासक्ति अथवा निर्लिप्तता मान लिया है। कर्तव्यहीनता अथवा कर्मकठोर जीवन–संघर्ष में उदासीनता को ही हिंदू धर्म में वीतराग वैरागियों का महात्याग बताया गया है। सांसारिक ओर जागतिक जीवन–संग्राम से पलायन के लिए ही तो हमारे द्विज देवों ने स्वर्ग–नरक–मोक्ष या अपवर्ग, कर्मफल और पुर्नजन्म अथवा आत्मा की अमरता का अनवरत आलाप किया है।

यही क्यों, अपने शोषण एवं दमन पर पर्दा ड़ालने के लिए ही तो भारतीय सवर्ण समाज ने वर्ण–व्यवस्था का विभेदकारी विधान किया था। जिसके आधार पर केवल द्विजातियां ही बल–बुद्धि–विद्या और ज्ञान तथा राज्यशक्ति और धन–धरती के वे जन्मजात स्वयंमेव ही स्वामी थे। तो शूद्र–श्रमिक और किसान–कामगार अथवा धातुकर्मी शिल्पकार उपर्युक्त सभी प्राकृतिक वरदानों से वंचित और विरहित ही थे। वे केवल सवर्ण–स्वामियों की निष्कामभाव से सतत सेवा–सुश्रुषा ही तो कर सकते थे। गीता–माता और मनुस्मृति में इसी कार्य से वे मुक्ति–मार्ग के पथिक बन सकते थे।

जैसाकि गीता श्रीमद्भगवद्गीता की स्वयं की ही साक्षी भी तो है ही–

मा हि पार्थ वयापाश्रित्य येचके अधमयोनयाः।
स्त्री शूद्राश्च तथा वैश्याश्च ते{पि यान्ति परागतिम्।।

(9/32)

अर्थात् हे अर्जुन! तुम्हें इस विषय में चितिंत होने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि जो भी पाप–योनियों अथवा अधम योनियों के स्त्री–शूद्र एवं वैश्य किसान हैंऋ मेरे शरणागत होने पर वे भी मुक्ति–पदगामी हो सकते हैं। यहाँ पर बजाय सामाजिक समानता के मुक्ति पर ही बल है–

अतएव उपर्युक्त उद्धरण में निःसन्देह ही श्रमशील उत्पादक श्रमिक वर्ग एवं वैश्य किसानों के साथ सम्पूर्ण स्त्री समाज तक को अधम–योनिज किंवा पापकर्मी ही तो प्रकारान्तर से बताया गया है। क्योंकि वे कृषि–कर्म एवं शिल्प–कला–कौशल में अहर्निश अनवरत श्रमरत लोग ही तो थे जोकि निष्कर्मण्य एवं अनुत्पादक सवर्ण समाज की उदरपूर्ति बैठे–बिठाये ही तो कर रहे थे।

अतएव भारतीय हिंदू समाज के धर्मग्रंथ क्योंकि वे एक विशिष्ट वर्ग–समाज की ही सृष्टि थे। अतएव उनमें भी श्रम के प्रति सम्मान कहाँ था, अपितु हेयता का हीनभाव ही तो भरा हुआ था। तभी तो वैदिक–साहित्य तक में कम्मी किवां कुर्मी किसानों को ही कर्मिणः अथवा कर्महीन या कमीन ही तो कहा गया था। क्योंकि सम्पूर्ण संस्कृत का साहित्य केवल अकेले परजीवी पुरोहित वर्ग की तो सुन्दर संरचना हैं। आखिर धर्म और संस्कृति का एकमात्र स्वयंभू भारत भर में ब्राह्मण–पुरोहित प्रवर ही तो रहा है। तब भला ज्ञान और विद्या या फिर शिक्षा पर उसके अबाध और अनवरत एकाधिकार के चलते उसी विप्र वर्ग में बुद्धि एवं ज्ञान का संकेन्द्रण क्यों नहीं होता। उसके बल पर ही तो इस अनुत्पादक वर्ग ने भारत के धर्म और संस्कृति एवं साहित्य से लेकर शिक्षा, शासन–प्रशासन और राज–काज में अपना निरन्तर एकाधिकार कायम कर लिया है। जिसको यह वर्ग सदैव अपनी जन्मजात योग्यता ही बखानता रहा है। इस सतत सुविधा भोग एवं अनुकुल अवसरों के ही कारण तो शासकीय सेवाओं तक में इसी वर्ग का एकाधिकार आज भी है।

इसी अबाध एकाधिकार को उन्मूलन करने के लिए ही तो भारत की केन्द्र सरकार में वह मंत्री रहते हुए चौ० चरणसिंह ने ही तो मण्डल–आयोग का गठन 1978 ई० में कराया था। 1980 ई० में उसकी अनुशंसाऐं आ गई थीऋ जिसके आधार पर अन्य पिछड़े किसान वर्ग को भी केन्द्रीय एवं राज्य स्तर की शासकीय सेवाओं में उसकी आबादी का आधा भाग(50 प्रतिशत) जोकि 27÷ बनता था, वह उसे मिलना चाहिए ही चाहिए था। लेकिन द्वैवदुर्वियाक अथवा दुर्भाग्य से जनता–पार्टी की केन्द्रीय सरकार का अपने अनन्त अर्न्तविरोधों के चलते ही अद्यःपतन ही अधबीच हो गया था। अतएव 1980 ई० के आसन्न लोक सभाई चुनावों में अपने सवर्ण वोट–बैंक के छिटक जाने के प्रभाव के चलते ही तत्कालीन राष्ट्रीय कांग्रेस की सरकार ने 'मण्ड़ल–आयोग' की अनुशंसाओं का बजाय क्रियान्वयन करने के उसको ठण्ड़े–बस्ते में ही ड़ालकर रख दिया था।

हृदय की कोई भाषा नहीं होती। हृदय से बातचीत करता है। – महात्मा गांधी

लेकिन जैसे ही बोफोर्स–तोपों के खरीद–कांड में घूस या फिर कमीशन–खोरी के आरोप के कारण श्री राजीव गाँधी की सरकार जब दुर्नाम होकर सत्ता–सिंहासन से च्युत हो गई थी तो श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जनता–दल की सरकार के अगले प्रधानमंत्री निर्वाचित हुये थे। जिनको जनतादल के लगभग डेढ़–सौ और भाजपा के छियासी तो साम्यवादी दलों के छियासठ सांसदों का सबल समर्थन हासिल था।

जब चौधरी देवीलाल और वी०पी०सिंह के मध्य में कुछ विवाद बढ गया था तो उसका लाभ तत्कालीन यादव या अहीर नायकों ने उठाने का भरपूर प्रयास किया था। जिनमें तबके युवा तुर्क शरद यादव और चन्द्रजीत यादव ही कहीं अग्रणी थे। उन्होंने मण्ड़ल–आयोग की अनुशंसाओं का यथावत् रूप में ही क्रियान्वित कराने पर अपना पूरा शक्ति–बल संगठित रूप से लगा दिया था। यादव अथवा अहीरों के डेढ सौ में से अकेले तीस–पैंतीस सांसद थे जोकि इस पक्ष में थे कि मण्डल–आयोग के वृत्त से किसानों का एकमात्र इंजिन समझे जाने वाली संघर्षशील एवं नेतृत्व प्रदान करने वाली जाट–जाति को उससे बाहर ही रखा जाए।

उसका एकमात्र तर्क इस विषय में यही था कि जाटों को मण्डल के तम्बू में लाने का अर्थ होगा जैसेकि किसी ने अपने ही तम्बू में ऊँट घुसा लिया हो। कारण, क्योंकि अन्य पिछड़े वर्ग के किसानों में से अकेली जाट जाति में ही यह अपार क्षमता थी कि वह मण्ड़ल–आयोग की अनुशंसाओं अथवा आरक्षण से जो लाभ मिलताऋ उसका एक बड़ा हिस्सा यही जाति बँटा सकती थी। अतएव शरद–यादव और चन्द्रजीत यादव की जुगल–जोड़ी ने श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के मन–मस्तिष्क में यही बिठाया था कि यदि आपको जनता–दल की केन्द्रीय राजनीति में से चौ० देवीलाल और चौ० अजीतसिंह को एक किनारे लगाना है तो बस यही एकमात्र मण्ड़ल का ब्रह्मास्त्र है। यही उनकी तुच्छ और अदूरदर्शी मेघामति में षड़यन्त्र समाया हुआ था।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह भी कोई सहज स्वभाविक रूप से संघर्ष करके तो राष्ट्रीय नायक बने नहीं थे। अपितु वे तो आँधी के आमों की ही भाँति अधपके और अपरिपक्व राजनीतिज्ञ ही थे। जैसाकि ब्रजभाषी गाँवों में एक कहावत भी प्रचलित है कि–

''खादर के गामन का और कथावाचक बामन का।
और आँधी के आमन का, विश्वास मतना करियौ।''

अर्थात् नदी के किनारे की कछारीय खेती वैसे तो बहुत शीघ्र ही बिना किसी प्रकार की सिंचाई के भी पककर तैयार हो जाती है लेकिन बाढ आते ही वह अविलम्ब विनष्ट भी तो हो ही जाती है। इसी प्रकार से कथावाचक ब्राह्मण अथवा व्यास कहीं की टाँग तो कहीं की पूँछ जोड़कर बेतुकी एवं अतार्किक और असंगत उद्धरण देकर ही वह अपने कथन को रोचक और प्रासंगिक बनाता है, जिसमें कोई तथ्य–सत्य कहाँ होता है?

इसी प्रकार से जबकि बाग में आमों में अमियाँ लगी हुई हों, और उसी अवसर पर तेज आँधी–तूफान आ जावे तो कितने ही अधपके या कच्चे आम डालियों से टूटकर नीचे भूतल पर आकर अपने ही गिर जाते हैं। लेकिन यह आवश्यक तो नहीं वे सब पक्के और मीठे भी हों। सो श्री वी०पी०सिंह भी बोफोर्स की अंधी आँधी के ही तो अधपक्के आम जैसे थे। जो व्यक्ति उ०प्र० के मुख्यमंत्री पद को भी असफल रहने के कारण अधबीच छोड बैठा था। भला क्या वही कुशलतापूर्वक क्या केन्द्र में नेतृत्व प्रदान कर सकता था।

अतएव उसने भी मुगल सेनापति नजीबुद्दौला खान रूहेला की भाँति यही ठान लिया था कि 'जाट मरा तब जानिए, जब तेरहांवी होये।' सो श्री वी०पी०सिंह ने भी आनन–फानन में ही अविलम्ब भाव से अध्यादेश पारित कराकर (केन्द्रीय मंत्रीमण्डल) से मण्ड़ल का मोहक परन्तु मारक ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया था। बस फिर कया था, चौ० देवीलाल के हाथों के तोते आकाश में अपने आप ही तो उड़ चले थे। हालांकि वे 9 अगस्त, 1990 ई० को क्रान्ति–दिवस के पावन पर्व पर दिल्ली में होने वाली अपनी विशालतम जनसभा में यही घोषणा करने वाले थे कि अन्य पिछड़े वर्ग के किसानों को बजाय 27 प्रतिशत के उनकी संख्या के समानुपात में ही कम–से कम 37 प्रतिशत आरक्षण तो केन्द्र सरकार की सेवाओं में भी मिलना ही चाहिए। इस विषय में वे अपना यह महत्त्वपूर्ण मन्तव्य 'माया' जैसी मासिक हिन्दी–पत्रिका में अपने एक साक्षात्कार में भी प्रत्यक्ष रूपेण प्रकट कर चुके थे।

लेकिन मुख से निकली हुई बोली और बंदूक की नाल से निकली हुई गोली, कहीं फिर वापिस भी लौटती है क्या? मण्ड़ल–आयोग की अंधी अनुशंसाएँ बिना किसी व्यापक विचार–विमर्श के ही लागू कर दी गई थी। एकमात्र मौखिक अध्यादेश के आधार पर ही उसको संसद से प्रस्तावित और पारित करने की भी आवश्यकता तब अनुभव नहीं की गई थी। तभी तो पूरे ही देशभर में उसके विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रियाएँ हुई थीं।

विशेषकर हमारा सवर्ण समाज जोकि सदियों से ही सतत रूपेण भारतीय हिन्दू समाज का एकमात्र कर्णधार अथवा अगुआ रहा था, वह तो अपने महाग्रास में से खग्रास भी किसी को कब देना चाहता था। जो शासकीय सेवाओं में तब तक उस वर्ग की पैतृक विरासत या बपौती जैसी ही बन गई थी, भला उनमें से एक चौथाई से भी अधिक का बँटवारा क्या उसे त्रिकाल में भी सहज स्वीकार्य होता? अपने जन्मजात जैसे विशेषाधिकारों को भला हमारा सवर्ण सभ्य स्वामी समाज सहज तथा कैसे भला किसी और के लिये समर्पित कर सकता था। अतएव देशभर में तोड़–फोड़ और आगजनी करके आत्मदाह का आडम्बर भी किया गया था। जो वी०पी० सिँह कभी राजा नहीं फकीर थे और भारत की तकदीर थे, वे तब एक ही जयचन्द जैसे देशद्रोही और धर्मद्रोही करार दे दिये गये थे।

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

उधर सवर्ण समाज की अकेली अलम्बरदार भारतीय (हिन्दू) जनता पार्टी ने अपना राम–रथ अयोध्या की ओर हाँक दिया था। ऊपर से भले ही वह रामजन्म भूमि की मुक्ति का ही मंगल–अभियान बताया गया था लेकिन मूलतः तो वह मण्ड़ल–मन्त्र की काट में किया गया कमण्ड़ल कांड ही था। भाजपा किवाँ ब्राह्मणवादी अथवा मनुवादी सवर्ण स्वामियों ने तब वही कुटिल कूटनीति अपनायी थी कि –'साँप भी मर जावे और लाठी भी ना टूटे।' उसके दोनों ही उद्देश्य इस एकमात्र धार्मिक अभियान से पूर्ण हो रहे थे। प्रथम मण्ड़ल–आयोग की अनुशंसाओं का प्रकट या प्रत्यक्ष विरोध करने की बजाय वी०पी० सिंह सरकार का अकाल पतन करके उसे अध्यादेश की वैधता को ही प्रश्नांकित करना था क्योंकि छः माह के अन्तर्गत किसी भी अध्यादेश का संसद में बहुमत से पारित होना अनिवार्य ही था। दूसरे, उसका हिन्दू एकता का उद्देश्य भी तो पूरा होता ही था।

अतएव रामरथ के अश्वमेघ के या नरमेघ के बेलगाम घोड़े की रास को जब बिहार के अन्दर वहाँ के तत्कालीन मुख्यमंत्री लालूप्रसाद यादव ने खींचकर खूँटे से बाँध दिया था तो भाजपा के सवर्ण स्वामियों को राममन्दिर की मुक्ति के विरोधी असुरगणों की उस अनार्य सरकार का अकाल अधःपतन करने का उत्तम अवसर ही मिल गया था। इसलिए उसने अपने सांसदों का समर्थन वी०पी०सिंह सरकार से खींच लिया था और वह अविवेकी एवं अदूरदर्शी अंधी सरकार स्वतः ही मृत्यु–मुख में समा गई थी।

उधर चौ० देवीलाल और उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री ओमप्रकाश चौटाला जोकि तब हरयाणा के मुख्यमंत्री पद पर समासीन थे, उन्होंने भी अपनी अकल के अकाल ही प्रदर्शन किया था। यदि वे आरक्षण का समर्थन भी नहीं करना चाहते थे तो कम–से–कम उस समय मौन–मूक बनकर उदासीन और तटस्थ भी बैठ सकते थे। चाहिए तो उनका सबल समर्थन ही देना क्योंकि वह स्वयं उनके अपने ही नीति और सिद्धान्तों के अनुरूप आया अध्यादेश था। लेकिन हिन्दी की हिन्दू(सवर्ण) पत्रकारिता एवं मास–मीडिया के व्यापक प्रचार–तन्त्र की प्रचण्ड प्रभाव–परिधि में आकर वे भी वी०पी० सिंह की पी०पी०(सीटी) बजाने पर अत्यन्त उतारू हो गये थे और हरयाणा में भी विनाशलीला का जमकर तांडव–नर्तन तब हुआ था।

किसान नेता श्री महेन्द्र सिंह टिकैत ने भी दिल्ली की सवर्ण आरक्षण विरोधी सभा में अत्यन्त उत्तेजक भीषण भाषण देकर अग्नि में घृताहुति का ही घृणित कार्य तब किया था। तत्कालीन जनता दल के भरतपुर से सांसद कुँवर विश्वेन्द्र सिंह ने मण्डल आयोग के विरोध में पद–त्याग करके उसे और भी अधिक जंगल की आग की भाँति हवा ही दे दी थी। तब तो सारा ही उत्तर भारत आग की लपटों में घिर उठा था। वह आग घृणा ओर विद्वेष या बैरभाव की ही थी। उस ज्वलित ज्वाला में अकेले चौ० अजीत सिंह ने ही महात्मा विदुर की भाँति तब अपनी विमल विवेक बुद्धि का परिचय दिया था। उन्होने बजाय मण्ड़ल–आयोग की अनुशंसाओं का उग्र विरोध करने के उसका सबल समर्थन ही किया थां अपितु जनता दल के अधिसंख्य सांसदों को संसद में उस विषय पर बहस के दौरान जाट जाति को भी उसका लाभार्थी बनाने के पक्ष में प्रबलता के साथ तैयार कर लिया था। लेकिन उस नक्कार खाने में तूती की आवाज सुनने वाला भला तब कौन था?

यादव अथवा अहीर नायकों क्या बलिक सहनायकों ने भले ही तब मण्डल का मोर्चा फतह कर लिया था लेकिन किसान–एकता की जो गाँठ चौ० चरणसिंह और चौ० देवीलाल ने उ०प्र०, बिहार, उडीसा से लेकर हरयणा से राजस्थात तथा गुजरात तक जो बाँधी थी, वह तभी बादलों की भाँति बिखर गई थी। तब भले ही भाजपा की समर्थन–वापसी से जनता दल की केन्द्रीय सरकार का अकाल–अकांड पतन या पराभव हो गया था। तब भी यदि जनता दल का बिखराव उस मण्ड़ल के मन्त्र से नहीं होता तो अजगर संघ की मध्यकिसान जातियाँ ही पूरे उत्तर भारत में आज तक एक सबल और सशक्त राजनीतिक शक्ति बनकर खड़ी रहती। तब तक भी कम–से–कम चार–पाँच महाप्रदेशों में उनकी अपनी ही सरकार आज तक भी होती तो पंजाब से लेकर कर्नाटक जैसे अहिन्दी भाषी प्रदेशों में भी उसके समर्थन के बिना कोई प्रादेशिक सरकार चल नहीं सकती थी।

उड़ीसा और राजस्थान तो जनतादल के अपने प्रभाव क्षेत्र ही थे। गुजरात में भी उसी के चिम्मन भाई पटेल की सरकार तब थी। लेकिन स्वजातीय तुच्छ लोग–लाभ के लिए ही अहीर–यादवों ने उ०प्र० और बिहार में ही सत्ता–शक्ति पाकर मण्ड़ल–मन्त्र से मुक्ति पा ली थी। आज भले ही वे पिछडे वर्ग को मिलने वाले आरक्षण की अकेले और अबाध लाभार्थी हो, लेकिन अजगर संघ की किसान जातियों की एकता और शक्ति को तो उन्होंने खंड–खंड करके साम्प्रदायिक सवर्ण राजनीति के लिए भी केन्द्र का सत्ता–सिंहासन निरापद और निष्कंटक बना ही दिया है। बात वही हुई कि लाठी भी टूट गई ओर साम्प्रदायिकता का सर्प भी विषम विषधर कराल व्याल बनकर आज इन्द्रासन पर शेषशायी विष्णु के समान बैठकर इठला रहा है। श्रमिक शक्तियाँ आजकल हाशिये पर इसीलिए चली गई हैं कि राष्ट्रीय स्तर पर उनको सबल एवं सफल नेतृत्व प्रदान करने वाली जाट जैसी सर्वाधिक संघर्षशील और संगठित जाति मण्ड़ल के महावृत्त से बाहर निकाल कर ऐसे फैंक दी गई है, जैसेकि दूध में से मक्खी को फैंक दिया जाता है। तभी तो अजगर संघ की जातियाँ आजकल पूर्णतः दिशाहीन होकर धूमकेतू की भाँति अपनी ध्रुवधुरी से भटककर विपथगामी बन गई हैं।

पूंजीवाद के आगे दम तोड़ती किसान राजनीति

– के. पी. मलिक

भारत संरचनात्मक दृष्टि से गांवों और किसानों का देश है। गांव के सभी समुदायों में लगभग सभी लोग किसी ना किसी माध्यम से कृषि कार्य पर आधारित है। इसीलिए भारत को कृषि प्रधान देश की संज्ञा दी जाती है। हमारे देश में लगभग 60 से 70 फीसदी लोग खेती किसानी से जुड़े है। मेरा मत है कि ये ही असली भारत है और यही लोग देश की रीढ़ की हड्डी के समान है। आज भारत को लूटने वाली विदेशी कंपनियों की निगाह इस समय देश के किसानों की पैतृक भूमि पर लगी हुई है जो उसके जीवन यापन का आधार रही है। भविष्य में ये कंपनियां भारतीय किसानों की भूमि अनुबंध या पट्टे पर लेकर उसमें कृषि करने के बहाने उनकी जमीनों पर अपना अधिकार कायम करेंगी और एक निश्चित अवधि के बाद कानून बनवाकर यह कंपनियां किसानों की जमीन की मालिक हो जायेंगी। अनुबंध में इस तरह की शर्तें होंगी जो कहीं ना कहीं किसान पूरी नहीं कर पाएगा और उसको प्रताड़ित किया काने के कारण वह अपनी पैतृक जमीन इन कंपनियों को देने के लिये बाध्य हो जाएगा और जो नहीं देगा, उसके खिलाफ मुकद्में दायर किए जाएंगें। जहां एक ओर किसान के दायर किये जाएंगे। जहां एक ओर किसान के पास पैरवी करने के लिए वकील को देने तक के पैसे नहीं होंगे, वहीं दूसरी ओर पूंजीवादी कंपनी के पांच वकील उसके पैरोल पर हमेशा रहेंगे, जो उसको बेईमान साबित करके अपराधी घोषित करवा देंगे और उसको जेल में सड़ने के लिए डाल दिया जाएगा।

भारतीय राजनीति में किसान का पक्ष मजबूती से रखने के लिए तमाम पुराने नेता हुआ करते थे। आज किसानों की आवाज उठाने वाले नेताओं का टोटा है। आज का दौर पूंजीवाद के आगमन के साथ बदल चुका है। संदियों से चली आ रही किसानों की दूर्दशा व अन्याय को तो ढोया जा रहा है मगर पूंजीवाद तले किसान के न्याय की लड़ाई भड़क चुकी है। भरत जैसा कृषि प्रधान देश जो सदियों से किसानों के साथ भेदभाव एवं वर्ण व्यवस्था का वाहक रहा है, वह आज बिना सामाजिक न्याय किये पूंजीवाद के मॉडल को अपनाने के द्वार पर खड़ा है। क्या यह समझा जाये कि अब सबकुछ पूंजीवादी मॉडल के पैरों तले रौंदा जा चुका है और जो लोग अभी तक किसान को न्याय दिलाने की जंग में लगे थे वो अप्रासंगिक हो चुके है? क्या भारत में किसानों की समस्या खत्म मान लिया गया है? अगर आप इसकी तह में जाएंगे तो हकीकत के धरातल पर ऐसा कुछ नजर आता नहीं है। आजादी के बाद भारत में अन्नदाता की लड़ाई जातिय गोलबंदी के तले ही लड़ी गई। आरक्षण से लेकर किसान आंदोलन तक संघर्षों का दायरा जातियों के इर्द–गिर्द ही घूमता रहा है। महात्मा गांधी गांवों को रामराज्य का सपना दिखाकर आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे और आज के प्रधानमंत्री मोदी भी देश को आत्मनिर्भर बनाना चाहते है। किसान की कर्मभूमि गांव सामाजिक भेदभाव की पहली कड़ी रहे और वर्तमान सता उसको देशभर में लागू करना चाहती है, इसके अलावा इस देश में रामराज्य की कोई परिकल्पना नहीं है।

वैसे तो दीनबन्धु चौधरी छोटूराम आजादी से पहले भी किसानों की लड़ाई लड़ते रहें। लेकिन उत्तर भारत में आजादी के बाद किसान राजनीति धीरे–धीरे राष्ट्रीय पर्दे पर आई। जब चौधरी चरणसिंह ने किसान कौमों को खेत से निकालकर सत्ता के गलियारों तक पहुंचाने का काम किया था। उत्तर प्रदेश से जाट, यादव, राजपूत आहीर और गुर्जर, बिहार से कुर्मी यादव और मुस्लिम, राजस्थान से जाट, गुर्जर और मीणा, हरियाणा से जाट, पंजाब से सिक्ख, महाराष्ट्र से मराठे और गुजरात से पटेल चौधरी चरण सिंह के नेतृत्व में राष्ट्रीय परिदृश्य में आये और जिनके दम पर राज्यों में सरकारें बनी। राष्ट्रीय राजधानी दिलली में अपना लोहा मनवाने वाले किसान पृष्ठभूमि से आए राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, कपूरी ठाकुर, देवीलाल, मुलायम सिंह यादव और लालू प्रसाद यादव आदि इस लिए उभरे क्योंकि चौधरी चरणसिंह ने इनको दिशा दिखाई थी। आज वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण के दौरान लॉकडाउन की इस विषम परिस्थितियों में देश के तमाम क्षेत्र धराशाई हैं वहां आज भी कृषि क्षेत्र सरकार के लिए सहारा बना हुआ है। पिछले सालों की अपेक्षा इस बार भी अन्नदाता ने कहीं अधिक मात्रा में अन्न के भंडार भर कर देश को अगले कई सालों तक भूखे ना मरने की गारंटी दे दी है। जाहिर है कि उत्तरी भारत में जाट किसान समुदाय की बहुसंख्यक आबादी है इसलिए तमाम बड़े किसान आंदोलनों का नेतृत्व भी वहीं करते रहे और बाकी किसान कौमें उनका अनुसरण कर और सीख लेकर सामाजिकक न्याय की लड़ाई लड़ती रही है। लेकिन बड़े दुःख के साथ लिख रहा हूँ कि राष्ट्रीय पार्टियों ने भारत की असलियत को त्यागकर खुद को पूर्णतया पूंजीवादी मॉडल की गोद बैठा लिया प्रतीत होता है। भारतीय इतिहास, सामाजिक व्यवस्था, वर्तमान हालातों को लात

मारकर ये पार्टियां गरीब बनाम अमीर अर्थात पूंजीवादी मॉडल में समा चुकी है। मगर भारत अभी भी सामाजिक न्याय और किसानों की जंग में उलझा हुआ है। सत्ता पंजीवादी मॉडल में और जनता समाजवादी मॉडल में संघर्षरत है, क्या कीजियेगा ? देश की हकीकत को दरकिनार करके सत्ता जनता से अलग रास्ते पर चली जाएं तो कदम–कदम पर संघर्ष होने लगता है। भारत की जनता भारत की सत्ता के खिलाफ लड़ती हुई नजर आती है। मध्यकालीन भारत में जब विदेशी आये थे तब भारत इन्हीं हालातों से गुर रहा था। जनता देशी राजाओं के उपेक्षा पूर्ण रवैये से परेशान थी। उसका नतीजा ये हुआ कि जो विदेशी आक्रमणकारी देशी राजाओं पर कहर बरपा रहे थे तब जनता चुपचाप तमाशीबीन बनी हुई थी। जाहिर है कि उसका खामियाजा सदियों तक हमें भुगतना पड़ा था। अगर कुल मिलाकर आजादी के बाद की किसान राजनीति पर गौर किया जाये तो काग्रेंस किसान राजनीति को महत्व नहीं देती थी। आज तत्कालीन सत्ताधारी भाजपा कांग्रेस की उसी परम्परा को आगे बढ़ा रही है। उस समय जाट नेतृत्व ने कांग्रेस के दांव को तोड़कर किसान राजनीति को मजबूती से खड़ा करने का काम किया था और आज जाट नेतृत्व राष्ट्रीय पार्टियों का पिछलग्गू या यूं कहें दरबारी बना हुआ है। जिसका नतीजा है कि किसान राजनीति हाशिये पर चली गई है आज देश का गरीब किसान पूंजीवादी मॉडल में फिट हो चुका है। प्रधानमंत्री ने कह ही दिया है कि सरकार 80 करोड़ लोगों के लिए अन्न की व्यवस्था कर रही है। आज सरकार रोटी–बाटी को इंतजाम देख रही है सामाजिक न्याय सरकारी नीतियों से गायब हो चुका है और जमीं पर लड़ाई होना बाकी है। आज के वर्तमान हालात ऐसे है कि कहीं दुश्मन से लड़ने से पहले इस देश की जनता व सत्ता के बीच संग्राम न हो जाये। सब तरह की लड़ाईयां समानांतर चल रही है और हर कोई हालात के हिसाब से मोलभाव कर रहा है। मगर इस देश का किसान अलग–थलग पड़ चुका है। उत्तर भारत में किसान राजनीति का नेतृत्व जो जाट कर रहे थे वो खुद नेतृत्व हीन हो चुके है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 2013 के मुज्जफरनगर दंगों द्वारा किसानों की राजनीति करने वाले रातनीतिक दल के नेतृत्व को निपटाकर पूंजीवादी आढ़तिये तैयार कर लिए गए। हरियाणा में सामाजिक न्याय और किसान की लड़ाई मुकद्दमों से बचने तक सीमित हो चुकी है। राजस्थान में परसराम मदेरणा व शीशराम ओला कके बाद किसान राजनीति खत्म कर दी गई। जिनके पुरखे कसान के रूप में इस देश की बुनियाद रख रहे थे, जिनके भाई सीमा पर खड़े होकर देश की अस्मिता को अक्षुण्ण रख रहे थे, जिनके नेता सामाजिक न्याय की लड़ाई को आदर्श मानकर चल रहे थे, जिनके बाप ऊपर वालों को आकाकात दिखाकर नीचे वालों के साथ इंसाफ करते थे, उस कौम के तथाकथित नेता आज राष्ट्रीय पार्टियों से टिकट लेने तक अपना दीन–ईमान बेच चुके है और विधायक–सांसद बन गए तो कौम की भलाई से बड़ी भूख मंत्री पद की हो चुकी है।

आज के जाट कौम से ताल्लुक रखने वाले किसान संगठनों के ज्यादातर नेता पूंजीवाद मॉडल के भूमाफिया है और कांग्रेस–बीजेपी के टिकटों पर जीते हुए लोग कौम के सौदागर! जाट कौम के इन किसान नेताओं व विधायक–एमपी बने लोगों से निवेदन करता हूँ कि आज समाज के किसी गरीब–लाचार–बेबस आदमी के साथ अन्याय होता बता दीजिए कहाँ जाकर इंसाफ मांगे ? याद करो पूरे उत्तर भारत में जाट राजनेता जो इंसाफ की लड़ाई लड़ रहे थे उसको आपने कहाँ तक पहुंचाया ? जिस किसान राजनीति को पुरखों ने खड़ा किया था उसको आसानी से निपटाया नहीं जा सकेगा। आप लोग अपना रोजगार शिट करके समाज को कोस सकते हो मगर भारतीय समाज अभी भी जाति व धर्म के नाम पर खड़ा है। यह दावा मैं नहीं करता बल्कि भारतीय संविधान व वर्तमान सत्ता स्वतः बता रही है। आज हालात यहां तक पहुंच चुके है कि किसी भावी जाट राजनेता को कॉल करें तो बोलते है कि तुम तो फलां क्षेत्रिय दल के लोग हो। जाट तो क्षेत्रीय दल के ही समर्थक होते हैं। मुझे गर्व है कि चौधरी चरण सिंह ने राष्ट्रीय पार्टी को लात मारकर क्षेत्रीय दल बनाया था। मुझे गर्व है कि मुलायम सिंह, मान्यवर कांशीराम ने राष्ट्रीय पार्टी को यूपी से भगाया था। मुझे खुशी है कि लालू यादव ने बिहार में क्षेत्रीय दल बनाकर किसान राजनीति को खड़ा किया। चौधरी देवीलाल से लेकर कुम्भाराम जी आर्य तक के सुर में किसान राजनीति की आवाज बने थे। किसान जब राजनीति में अपना स्थान बनाता है और अपना दल खडत्रा करता है तो इस देश में सामाजिक न्याय एवं किसानों को इंसाफ मिलनने लगा है। बहरहाल आज के नेताओं को कहना चाहता हूं कि राजनीतिक दलों की कठपुतली बनकर कितनी भी दौलत इक्कट्ठी कर लो, कितने ही अमीर बनकर अपनी कौम से नफरत करो मगर याद रखना इस देश की बुनियाद समाजवाद है और इसी से होकर भारत का भविष्य तय होगा। कांशीराम के द्वारा दिये खिताब 'चमचे' भारत की तकदीर नहीं हों सकते। यह देश किसान क्रांति का भूखा है और जब तक खेतों से निकलकर अपने नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता व बंधुता के किसाब से न्याय नहीं दे देता तब तक पूंजीवादी मॉडल देश के भीतर चुनिंदा टापू ही होंगे और जब भी देश की जनता जायेगी तब झोले से पहले टापुओं को फूंकेगी।

जुआ सुख, संपत्ति और समय इन तीनों का, जो जीवन के लिए अति मूल्यवान है, नाश करता है। –अज्ञात

कौन हैं जाट ?

जाट जाति की उत्पति और विस्तार : सुप्रीम कोर्ट द्वारा आरक्षण रद होने से एक का ऐक बार फिर से यह शब्द चर्चा में हैं तमाम लोगों के दिमाग में सवाल उठ रहा है कि जाट कौन है और इनका पौराणिक और ऐतिहासिक परिपेक्ष्य क्या है, दरअसल जाट भारत और पाकिस्तान में रहने वाला एक क्षत्रिय समुदाय है। भारत में मुख्य रूप से पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश और गुजरात में बसते है। पंजाब में यह जट कहलाते है तथा शेष प्रदेशों में जाट कहलाते है। जाट एक अति प्राचीन समुदाय है। इस समुदाय की समाजिक संरचना बेजोड़ है। इन्होंने आदिकाल से कुछ सामान्य सामाजिक मापदण्ड स्वयं ही निर्धारित कर रखे हैं। आज भले ही हम गोत्र और खाप की बात करते है, पर जाट समाज की गोत्र और खाप की व्यवस्था अति प्राचीन है और आज भी इनका पालन हो रहा है। जाट समाज में अपने वंश गोत्र के लोग परस्पर भाई–भाई की तरह मानते है।

जाट जाति की उत्पत्ति के सिद्धान्त : जाट जाति की उत्पति के बारे में अनेक कथाएं प्रचलित है। इनके पौराणिक और ऐतिहासिक परिपेक्ष्य को बताने के लिए तमाम तरह के प्रमाण प्रस्तुत किए गए है, परन्तु कोई भी एक अकेला सिद्धान्त इस जाति की उत्पति को पूर्ण रूप से समझने में असफल है। जाट जाति की उत्पति के मुख्य सिद्धान्त निम्नानुसार है :

ज्येष्ठ की जाट उत्पति : कुछ इतिहासकार जाट जाति की उत्पति ज्येष्ठ शब्द से मानते है। ऐसी धारणा है कि राजसूर्य–यज्ञ करने के बाद युधिष्टिर को ज्येष्ठ घोषित किया गया था। आगे चल कर उनकी सन्तान ज्येष्ठ से जेठर तथा जेटर और फिर जाट कहलाने लगे। कुछ अन्य इतिहासकार मानते है कि पाण्डवों को महाभारत में विजय दिलाने के कारण श्रीकृष्ण को युधिष्ठिर की सभा में ज्येष्ठ की उपाब्धि दी गई थी। कि वदंति और ऐतिहासिक तथ्यों पर नजर डाले तो सृष्टि के आदि में जाट प्राचीनतम क्षत्रिय थे। वीरभद्र शिव का अंश था जिससे जाट उत्पन्न हुए। उस समय जाट गणों के रूप में संगठित थे। विवेचकों का तर्क है कि शिव ने चन्द्रवंशी जाटों एवं नागवंशी क्षत्रियों को संगठित किया। इन क्षत्रिय वर्गों की शक्तियां शिव में संगठित किया। इन क्षत्रिय वर्गों की शक्तियां शिव में समहित हो गई। लिंगानुपात में शिव के 1000 नाम दिए है। उनका हर नाम किसी क्षत्रिय वर्ग का प्रतीक है, अनेक जाट गोत्र इनमें से निकले है। रामस्वरूप जून ने अपनी जाट इतिहास की पुस्तक में वीरभद्र की वंशावली दी है जिसके अनुसार पुरू की वंशावली में संयति के पुत्र वीरभद्र के वंशज पौनभद्र से पूनियां, कल्हण भद्र से कल्हन, दहीभद्र से दहिया, जखभद्र से जाखड़, ब्रह्मभद्र से बमरोलियां आदि जाट गोत्रों की शाखाएं चली। शिववंश में सम्मिलित कुछ गोत्र है : अग्रे, अंधा, अगा, अगि, अगाव, बुरडक, भगोर, भोभिया, भौविया, घांड़ा, ढांड़ा, धान्धा, धीमान, हरी, हरीवाल, हरीकर, खांगल, किन्हा, किलकिल, कलकल, करकिल, उदर, उन्दरास, वरदा, अंजना आदि।

हरियाणा की कहानीः स्वतंत्रता और विभाजन का हरियाणा की राजनीति पर प्रभाव

– प्रोफेसर रणबीर सिंह

15 अगस्त 1947 के दिन जहां देश स्वतंत्र हुआ, वहां इसका विभाजन भी हो गया। दोनों घटनाओं का हरियाणा की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा। पूर्वी पंजाब के प्रांत भारत में शामिल हुए, जिसमें इस क्षेत्र के गुरुग्राम, हिसार, रोहतक, करनाल और अंबाला जिले शामिल थे। शेष भारत की तरह यहां भी सांप्रदायिक दंगे हुए और गुरुग्राम के मेवात क्षेत्र को छोड़कर बाकी क्षेत्रों को मुसलमान पाकिस्तान चले गए और पश्चिम पंजाब (पाकिस्तान) से एक बड़ी संख्या में हिंदू और सिख यहां अपना सब कुछ गंवाकर पहुंच गए। उस समय की कांग्रेस–अकाली सरकार के पुर्नस्थापना विभाग के मंत्री, ज्ञानी करतार सिह ने जहां हिंदुओं को रोहतक, गुरुग्राम हिसार, करनाल और अंबाला जिलों में बसाया, वहां सिखों को मुख्यतः करनाल और हिसार जिलों में बसाया गया ताकि पंजाब में एक सिख बहुल क्षेत्र स्थापित किया जा सके। 1949 में 1949 में बंजर लॅा यूटिलाइजेशन एक्ट बनाकर अमृतसर जिले के सिख किसानों को पट्टेदार के रूप में इन्हीं दोनों जिलों में बसाया गया। जनसंख्या में हुए इस परिवर्तन ने हरियाणा की राजनीति में शहरी–ग्रामीण और जमींदार की बजाय यहां स्थानीय और पंजाबी के मुद्दे को शहरी क्षेत्रों की राजनीति में महत्वपूर्ण बना दिया। क्योंकि परिश्रम में पंजाबियों के यहां के व्यापार और उद्योगों में और आधुनिक व्यवसायों (जैसे कि वकालत, चिकित्सा आदि) में स्थानीय लोगों को पीछे छोड़ दिया। ग्रामीण क्षेत्रों में सरकार से मिली सांख्यता और अपनी मेहनत तथा मशीनीकरण की शैली से

मेहनत की फसल आप ही काटेंगे, सदैव ऐसा नहीं होता। हम आम खाते हैं पर पेड़ हमने नहीं लगाए थे। –लोकमान्य तिलक

सिख किसान वर्ग ने स्थानीय किसानों से आगे निकल गए। सत्या– एम–राय ने अपनी पुस्तक 'पार्टीशन ऑफ पंजाब' में इन्हें ही हरियाणा प्रांत की मांग की उत्पति का कारण माना है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान के द्वारा सार्वजनिक व्यस्क मताधिकार प्रदान करने का भी यहां की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा। अनुसूचित जातियों और पिछड़ी जातियों और अन्य जातियों के साधन विहीन लोगों को मताधिकार मिलने, उच्च जातियों और वर्चस्व प्राप्त भूमिपति जातियों को नई चुनौतियां मिलने लगी। यूनियनस्टि पार्टी के समाप्त होने से चौधरी छोटूराम द्वारा स्थापित जमींदार जातियों का गठबंधन भी समाप्त हो गया तथा अहीरों, गूजरों, राजपूतों, रोड और सैनियों ने जाटों के वर्चस्व को चुनौती देना शुरू कर दिया। उपरोक्त दोनों प्रवृतियों को बढ़ावा देने में कांग्रेस की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही क्योंकि वह यूनियनस्टि पार्टी के नए अवतार जमीदार लीग के बचे खुचे प्रभाव को समाप्त करना चाहती थी। गौरतलब है कि स्वतंत्रता के बाद शेष भारत की तरह, हरियाणा में भी कांग्रेस का वर्चस्व स्थापित हो गया था लेकिन इस पर पंजाब राज्य में गोपीचंद भार्गव और भीमसैन सच्चर के धड़ों में गुटबंदी का बहुत गहन प्रभाव था। जहां हिसार के कैप्टन रणजीत सिहं भार्गव के साथ थे वहां पंडित श्रीराम शर्मा और चौधरी लहरी सिंह सच्चर के समर्थक थे। इस गुटबंदी से उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता को खत्म करने के लिए ही 1951 में पंजाब के तत्कालीन गर्वनर चन्दू लाल त्रिवेदी की सिफारिश पर राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया था।

1947–52 की हरियाणा की राजनीति पर 1949 में बने सच्चर फार्मूले का भी गहन प्रभाव पड़ा। इसे बनवाने में अकाली नेता ज्ञानी करतार सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। क्योंकि भार्गव मुख्यमंत्री रहते हैं या सच्चर मुख्यमंत्री बनते हैं यह अकालियों के समर्थन पर निर्भर करता था। इस फार्मूले पर हरियाणा के कांग्रेसी नेता, प्रो– शेर सिंह के भी हस्ताक्षर थे।

इस फार्मूले को इसलिए भी बनाया गया क्योंकि अकाली नेता मास्टर तारा सिंह ने पंजाबी सूबे की मांग खड़ी कर दी थी और वे चाहते थे कि गुरुमुखी लिपि में पंजाबी भाषा को पंजाब की सरकारी भाषा बनाया जाए लेकिन पंजाब के हिंदु इस मांग के खिलाफ थे। हरियाणा क्षेत्र के लोग भी हिंदी भाषी होने के कारण इस मांग को मानने के लिए तैयार नहीं थे। इसीलिए बीच का रास्ता निकाला गया जिसे सच्चर फार्मूला कहते हैं। पंजाबी क्षेत्रों में पहली कक्षा से पंजाबी की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई। हरियाणा और पहाड़ी क्षेत्रों में पांचवीं कक्षा से पंजाबी को दूसरी भाषा के तौर पर अनिवार्य कर दिया गया। भाषा के प्रश्न पर पंजाब में इतनी कटुता पैदा हुई कि 1951 की जनगणना में पंजाब में भाषा का कॉलम ही हटा दिया गया। हरियाणा राज्य की मांग को इसी परिपेक्ष में समझा जा सकता है। 1957 का हिंदी रक्षा आंदोलन भी इसी फार्मूले के विरुद्ध था।

परमवीर चक्र का डिजाईन कैसे बना?

–सूरजभान दहिया

ऐतिहासिक वीर भूमि 'हरियाणा' आज भी अपनी उसी पुरानी शान के साथ चमक रहा है जैसा कि वह वैदिक प्रभात के क्षितिज पर उदित हुआ था। यह आर्य क्षेत्र जहां वैदिक काल में यज्ञों की स्थली, विद्वानों की लीला भूमि और अनेक प्रसिद्ध वीरों की जन्म भूमि रहा है, वहां विदेश से आने वाले आक्रांताओं का भी लगातार सदियों तक इसने जमकर मुकाबला किया है। मुस्लिम आक्रांताओं के समय में भी यह कई सौ वर्षों तक बराबर युद्धस्थली बना रहा, खून की होली खेलता रहा। यहां हर घर में वीरों की पौध लगती रही और फिर यहां की अल्हड एवं अदम्य साहस वाली जवानी ने कभी झुकना नहीं जाना। मनु महाराज ने लिखा है कि कूच करते समय इस प्रदेश के सैनिकों को ही सेना के आगे रखना चाहिये।

सैनिक शौर्य को भिन्न–भिन्न कालो में अलग–अलग प्रकार से सम्मानित किया जाता रहा है। आजादी से पूर्व भारतीय सैनिक को बहादुरी के लिये सर्वोच्च सम्मान विकटोरिया क्रास था। जब भारत आजाद हुआ तो विकटोरिया क्रास जैसा ही पदक भारतीय सैनिक को उसकी पराक्रमता के लिये किस प्रकार का हो, इस पर सघन मंथन किया गया। इस प्रकार के मंथन के पश्चात यह निर्णय लिया कि भारतीय सैनिक को उसके अद्वितीय शौर्य हेतु परमवीर चक्र प्रदान किया जायेगा।

परमवीर चक्र का डिजाईन किस प्रकार का हो, इस पर भी काफी विचार विमर्श हुआ। यह सुखद आश्चर्य है कि परमवीर चक्र का डिजाईन किसी भारतीय ने नहीं तैयार किया अपितु यह श्रेय विदेशी महिला ईवा को जाता है जिन्होंने सघन अनुसंधान करने के पश्चात परमवीर चक्र का डिजाईन बनाया। ईवा स्वीटजरलैंड की निवासी थी जिनके पिता हंगरी के रहने वाले थे तथा उनकी माता रूसी थीं। वह 20 जुलाई, 1913 को जन्मी थी। ईवा बचपन से ही भारतीय संस्कृति से अति प्रभावित थी। वह शाहकारी थी तथा युवा अवस्था से ही सूरज की भारतीय पद्धति अनुसार स्तुति करती थी। वह यूरोप में मेजर–जनरल विक्रम आररु खनोलकर से मिली थी तथा उसने जनरल साहिब से शादी कर ली और अपना नाम सावित्री बाई रख लिया।

दिल्ली में रहते उनका सामाजिक गतिविधियों में गहरी रूचि हो गई तथा भारतीय सैन्य सर्कल में उनकी चर्चा

होने लग गई। वह प्रथम महिला थी जिसने इंडिया फ्लाईंग क्लब की सदस्यता ग्रहण की। उन्होंने भारतीय जीवन तथा संस्कृति का गहन अध्ययन किय। जब उनहें परमवीर चक्र का डिजाईन तैयार करने हेतु निमंत्रणा मिला तो उन्होंने भारतीय प्राचीनतम मान्यताओं एवं परम्पराओं का सहारा लेकर परमवीर चक्र का डिजाईन तैयार करने का मन बनाया।

उनकी अप्रकाशित जीवनी में उल्लेख उपलब्ध है कि वह किस प्रकार परमवीर चक्र के डिजाईन से जुड़ी। एक बार उनसे मेजर जनरल अतुल ने पूछा– ''भारतीय सैनिक की उच्चतम वीरता को एक पदक में किस प्रकार इंगित किया जा सकता है?'' जनरल साहिब ने उच्चतम वीरता हेतु परमवीर चक्र का नाम नामांकित तो कर दिया था परंतु वे चाहते थे इसका डिजाईन भारतीय आदिकाल के इतिहास एवं पौराणिक मान्यताओं से उदित हो। श्रीमती सावित्री बाई खनोलकर इस संबंध में अपनी जीवनी में लिखती हैं– ''मेरा स्पष्ट मत था कि परमवीर चक्र के डिजाईन हेतु दधीचि ऋषि के साहस एवं बलिदान का विवरण करना ही प्रमुख होना चाहिये।'' दधीचि ऋषि को महादेव शंकर की कृपा से बज्रस्थिल्व, अदीनतत्व और अवध्यतव प्राप्त था। उत्तर वैदिक साहित्य में दधीचि भृगु वंश में उल्लेखित हैं तथा दहिया समाज इनसे संबंधित है। ये महातपस्वी सोनीपत जिले के वरुण गांव से घने जंगलों में तपस्या में रहते थे। जब दानव देवताओं को यातनाएं दे रहे थे, तो इन्द्र इन्द्रप्रस्थ से चलकर दधीचि ऋषि के पास स्वयं पधारे तथा उनसे अनुरोध किया कि वे अपनी हड्डियां उन्हें दान के रूप में दे। दधीचि ऋषि ने अपनी हडियां इन्द्र को देकर अपना बलिदान किया तथा इन हडियों से इन्द्र ने बज्र बनाया तथा दानवों का संहार करके देवताओं की रक्षा की थी।

श्रीमती सावित्री खनोलकर आगे अपनी आत्मकथा में लिखती हैं– ''मैंने परमवीर चक्र के डिजाईन में दधीचि ऋषि की हडियों से बने दो वज्रों को सम्मिलित किया और इस प्रकार मैंने परमवीर चक्र निर्मित किया जो भारतीय सरकार ने स्वीकार कर लिया।'' 1971 के भारत–पाक युद्ध में मेजर होशियार सिंह दहिया को उनके अद्वितीय शौर्य के लिये भारत सरकार ने परमवीर चक्र से सम्मानित किया था। जब राष्ट्रपति ने उन्हें परमवीर चक्र से सुशोभित किया तो पत्रकारों ने उनसे इस गौरव को पाने पर प्रतिक्रिया देने का अनुरोध किया। मेजर साहिब (बाद में कर्नल होशियार सिंह दहिया) ने विनम्रता से बस यही कहा– ''यह हमारे कुल की परम्परा ही है कि हम मातृ भूमि की रक्षा के लिये बलिदानी बनें। मेरे कुल के प्रवर्त्तक दधीचि ऋषि इस परमवीर चक्र पर जीवित बनकर देश की रक्षा हेतु अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए मेरे प्रेरक एवं शृहदेय बने हुये हैं।''

डायन महंगाई डकार गई किसान की पूरी कमाई

– के.पी. मलिक

वैश्विक महामारी कोरोना संक्रमण के मद्देनजर लॉकडाउन की विषम परिस्थितियों में लगातार बढ़ती महंगाई से जहां आम आदमी की कमर तोड़ी है वहीं किसान भी इससे अछूता नहीं है। आज तमाम क्षेत्रों में उत्पादन बंद होने के बाद भी कृषि एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें किसान ने लगातार रिकॉर्ड उत्पादन करके सरकार को राहत प्रदान करने का उत्कृष्ट कार्य किया है। लेकिन उसके बावजूद भी किसान को अपनी उपज का सही दाम नहीं मिल पा रहा है। उसकी फसल बाजार में बिक नहीं पा रही है और महंगाई दिन दुगुनी और रात चौगुनी बढ़ रही है इसी से बेहाल कुछ किसान पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जिले शामली के कुड़ाना गांव में हुक्का गुड़गुड़ाते कहते हैं कि इस क्षेत्र में अधिकतर किसान गन्ने की खेती पर निर्भर है। गन्ने का सीजन समाप्ति के बाद भी गन्ना मिले भुगतान नहीं कर रही हैं। 2017 के विधानसभा चुनाव में देश के प्रधानमंत्री ने हमारे क्षेत्र में लगातार रैलियां करके कहा था कि अगर हमारी पार्टी की सरकार प्रदेश में आती है। तो हम तत्काल 14 दिन में गन्ने का भुगतान करवाएंगे। लेकिन प्रधानमंत्री अैर मुख्यमंत्री का वादा खोखला सिद्ध हुआ है। आज तीन साल के बाद भी किसानों को बकाया गन्ना भुगतान नहीं हो पा रहा है। जिसकी वजह से किसान बहुत परेशान हैं। धान की फसल की बुवाई के लिए खाद, पानी और डीजल की व्यवस्था करने और बिजली आदि का बिल भुगतान के लिए गन्ना मिलों पर निर्भर रहना पड़ता है।

स्थानीय किसान जयपाल सिंह का कहना है कि इतिहास में पहली बार है कि डीजल पेट्रोल से महंगा है यह किसानों के साथ अन्याय है। ऊपर से रही सही कसर बिजली की दरों में भारी बढ़ोतरी ने कर दी है। गन्ने की फसल के लिए कीटनाशक, उर्वरक आदि के भाव बढ़ते ही जा रहे हैं। आमदनी न होने के कारण किसान के पास पैसा नहीं है। इसी वजह से किसान खेती के उपकरण भी नहीं खरीद पा रहे हैं। बच्चों के स्कूलों से लगातार दबाव पड़ने के बावजूद उनकी फीस, घर में शादी–विवाह, तीज–त्यौहार और अन्य खर्चों के लिए किसान पाई–पाई मोहताज है। रही सही कसर इस महामारी कोरोना ने पूरी कर दी जिससे बड़े बुढ़ों को दवाई दिलाने में भी दो–चार पड़ रहा है। किसान की दूसरी बड़ी चुनौती किसी तरह टिड्डी दल से बची फसलों को आवारा जानवरों से बचाना हैं। आवारा पशु बड़ी संख्या में खेतों में घूम रहे हैं। प्रदेश की योगी सरकार ने तो जाने किसान से मुंह ही फेर लिया है। गौशाला बनाने और उनको संचालित करने का वादा खोखला साबित हो रहा है। गांव के किसानों का कहना है कि आवारा जानवर किसान की फसल को तबाह कर देते हैं। जो थोड़ा सामर्थनुसार किसान अपने खेत के चारों

दुनिया बहुत कष्ट सहती है। बुरे लोगों की हिंसा के कारण नहीं, बल्कि अच्छे लोगों के मौन के कारण। –नैपोलियन

ओर बाढ़ बना लेता है। लेकिन सभी किसान इस प्रकार खेत को घेरने की सामर्थ्य नहीं रखते। तो ऐसा किसान क्या करेगा, उसकी हालत पहले से ही बहुत खराब है।

किसान यूनियन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सवित चौधरी के मुताबिक 'केंद्र सरकार के तमाम दावों के बावजूद ग्रामीण अर्थव्यवस्था और किसानों की दशा सुधरने का नाम नहीं ले रही है कई राज्यों में फसलों का उचित दाम नहीं मिल रहे हैं ओर जिस अनुपात में महंगाई बढ़ रही है उस अनुपात में किसान की आमदनी नहीं हो रही है। अगर किसान की आमदनी अच्छी होती है तो वह अपनी खेती को बढ़ाने के लिए आधुनिक कृषि यंत्र एवं ट्रैक्टर आदि खरीदने की चेष्टा करता है। लेकिन पिछले दो साल से गन्ने का दाम ने बढ़ना और महंगाई के तेजी बढ़ जाने से किसान के कृषि यंत्र खरीदने की हिम्मत नहीं पड़ रही है। जिसकी वजह से वह किराए पर कृषि यंत्र और ट्रैक्टर लेकर जैसे तैसे अपनी खेती का काम चला रहा है। प्रधानमंत्री सम्मान योजना के तहत किसान को दिये जा रहे छः हजार रुपये किसान के लिए ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। सरकार को कम से कम यह रकम तीन गुणा बढ़ानी चाहिए, तभी किसान का कुछ भला हो सकेगा।

जबकि मोदी सरकार लगातार किसानों की आमदनी बढ़ने का दावा कर रही है। किसानों की आय को दोगुना करने के लिए बनाई गई समिति यानि (डबलिंग फार्मर्स इनकम कमेटी) के अध्यक्ष डॉ. अशोक दलवई के मुताबिक मोदी सरकार की किसान हितैषी नीतियों और कोशिशों से भारत के किसानों की आमदनी लगातार बढ़ रही है। रिकॉर्ड के मुताबिक लगभग 10 करोड़ किसानों के बैंक खातों में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि स्कीम के तहत रकम भेजी जा चुकी हे। अभी तक जिन किसानों के खातों में पैसा नहीं जा पाया है उनकी कोई न कोई तकनीकी कमी रही हैं जैसे उनका आधार कार्ड उनके बैंक खातों से ना जुड़ा हो ना या इसके अलावा उनके बैंक खाते ना होना इस प्रकार की कुछ खामियां रही हैं उन खामियों को सरकार जल्द से जल्द पूरा करने की कोशिश कर रही है। प्रधानमंत्री के आदेश अनुसार लगभग 75 हजार करोड़ रुपया किसानों के हाथों में सीधा पहुंचा दिया गया है। प्रधानमंत्री के 2022 के किसानों की आय को दुगनी करने के लक्ष्य के अंतर्गत किसानों को अपनी फसल बेचने के लिए कई आधारभूत फैसले किए गए हैं। जोकि किसान की आय को तेजी से बढ़ाने में मदद करेंगे और जिससे हम अपने 2022 तक के किसान की आमदनी दुगनी करने के लक्ष्य को पाने में काफी हद तक सफलता हासिल कर सकेंगे। जिसके अंतर्गत अगले कुछ सालों में करीब दस हजार 'किसान उत्पादक संगठन' (एफपीओ) बनाने का केंद्र सरकार का लक्ष्य है।

बहरहाल मेरा मानना है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को उभारने के लिए सरकार को किसान के हाथ तक पैसा पहुंचाना जरूरी है क्योंकि जब तक किसान के हाथ में पैसा नहीं होगा, तब तक ग्रामीण ही नहीं देश की अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में सहायता नहीं मिलेगी। अगर किसानों के पास पैसा होता तो वे उसको तत्काल बाजार में खर्च करेंगे। जिससे अर्थव्यवस्था का पहिया घूमने लगेगा। आंकड़ों के मुताबिक देश के लगभग डेढ़ दर्जन राज्यों में किसानों की वार्षिक आय लगभग बीस हजार रुपये से भी कम आंकी गई है। इससे आसानी से समझा जा सकता है कि कृषि क्षेत्र की हालत कितनी गंभीर है। अगर जल्दी ही किसानों की हालत नहीं सुधरी, किसानों को उनकी फसल का उचित दाम नहीं मिले ओैर किसानों की आय इसी प्रकार गिरती रही तो इसके दुष्परिणाम ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दिखाई देंगे। आज किसानों की लगातार घटती आय, फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य तक नहीं मिल पाना, खेती को घाटे का सौदा बना रहा है। जिससे किसान का खेती से मोह भंग होने के बावजूद वह मजबूरी में खेती की जद्दोजहद में लगा हुआ है। भारत के सर्वाधिक गन्ना उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश की बात करें तो पिछले दो साल से गन्ने का दाम न बढ़ना किसान के लिए हैरान करने वाला है। ऊपर से किसानों का गन्ना भुगतान लगभग 14.5 हजार करोड़ रुपये बकाया है।

कमांडर इन चीफ व आजादी के संग्राम के महानायक चन्द्रशेखर आजाद को नमन

–एडवोकेट रघुबीर सिंह दहिया

भारत के आजादी आंदोलन के इतिहास में क्रांतिकारियों ने त्याग, वीरता, बलिदान, देशप्रेम और शहादतों के शानदार प्रतिमान स्थापित किए। प्यार में इतनी ताकत है कि इंसान के जीवन को बदल देता है। उन क्रांतिवीरों ने ब्रिटिश गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी आजादी के दर्द को समझा और इंसानियत के फर्ज में देशभक्ति के प्यार की महानता से आकर्षित होकर सशस्त्र क्रांति के मार्ग पर आगे बढ़े। 1917 में रूस की महान अक्टूबर क्रांति से मानव.समाज के इतिहास में एक नए इन्सान का विकास हुआ, जिसने सब प्रकार के शोषण से मानव की मुक्ति का शानदार रास्ता खोल दिया। उस समाजवादी क्रांति से प्रेरित इनकी शहादतें क्रांतिकारी आंदोलन का उच्च आदर्श बनीं। एक अचूक निशानेबाज जिसका नाम सुनकर अंग्रेज सरकार भय से थर.थर कांपती थी। उस महान क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद ने हिंदुस्तान सोशलस्टि रिपब्लिकन एसोसिएशन का नेतृत्व करते हुए आजादी की चाहत में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ों को हिलाकर खोखला कर दिया। उनका

विचार का चिराग बुझ जाने पर आचार अंधा हो जाता है। –बिनोवा भावे

समझौताहीन जीवन संघर्ष आम जनता के लिए आज भी प्रेरणा स्रोत है। चंद्रशेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 में मध्यप्रदेश की रियासत अलीराजपुर के भांवरा गांव में हुआ। उनके पिता का नाम सीताराम और मां का नाम श्रीमती जगरानी देवी था। छह वर्ष की आयु में चंद्रशेखर का दाखिला गांव के प्राथमिक विद्यालय में करवाया गया। उस विद्यालय में आदिवासी भीलों के बच्चों के साथ तीर कमान चलाना सीख लिया। कुछ समय बाद स्कूल छोड़ नौकरी करने लगे और अवसर पाकर काम की तलाश में बम्बई चले गए। बम्बई में मजदूरी करते हुए मजदूरों की दुर्दशा और शोषण को बहुत करीब से देखा और समझा। कुछ समय बाद बम्बई से वापस आकर संस्कृत पढ़ने के लिए बनारस चले गए। 1921 में असहयोग आंदोलन की लपटें बनारस पहुंची तो विद्यार्थी चंद्रशेखर पूरे उत्साह एवं ललकार के साथ एक जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे कि पुलिस ने गिरतार कर मजिस्ट्रेट के सामने पेश कर दिए। मजिस्ट्रेट के पूछने पर अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वाधीन और घर जेलखाना बता दिया।

उस दिन से ही चंद्रशेखर का नाम चंद्रशेखर आजाद विश्व की इतिहास की किताबों में दर्ज हो गया। मजिस्ट्रेट ने खन्नि होकर उस 15 साल के आक्रोशी विद्यार्थी चंद्रशेखर आजाद को 15 बैंत मारने की क्रूर सजा सुनाई। बेंत की मार ऐसी थी कि देखने वालों की रूह भी कांप उठे। खाल उधड़ती रही लेकिन आजाद के मुंह से महात्मा गांधी की जय का नारा ऊंची से ऊंची आवाज में गूंजता रहा। अनेक पत्र.पत्रिकाओं में उनके साहस और उत्साह की प्रशंसा में लेख प्रकाशित हुए। उनको देखने और सम्मान प्रकट करने वालों का बनारस की गलियों में कई दिन तक तांता लगा रहा। मां की ममता भी बनारस चली आई और लोगों का प्यार देख कर मां का हृदय भी खुशी से गदगद हो गया। असहयोग आंदोलन चरम पर था और ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आम जनता में गुस्सा बढ़ रहा था। लगभग एक लाख वद्यिार्थियों ने सरकारी स्कूल.कॉलेजों का बहष्किार किया और गैर सरकारी शैक्षिण संस्थानों की स्थापना का उद्देश्य शिक्षा का प्रचार प्रसार करने का काम तेजी से आगे बढ़ा। देश बंधु चितरंजन दास बट्टिल भाई पटेलए मोतीलाल नेहरूए जवाहर लाल नेहरूए डॉ० राजेंद्र प्रसादए बल्लभ भाई पटेल इत्यादि ने वकालत छोड़ देश सेवा का काम हाथ में लिया। चोरी.चोरी घटना के बाद महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन को वापस लेने पर क्रांतिकारियों ने कहा अब हम क्या करें. कहां जाएं। आपके कहने से स्कूल कॉलेज छोड़ कर आंदोलन में शामिल हुए थे। चंद्रशेखर आजाद पूरी हिम्मत निष्ठा और लगन के साथ सशस्त्र क्रांति की राह पर आगे बढ़कर 1982 में मात्र 16 वर्ष की उम्र में क्रांति दल शामिल हुए और हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संस्थापक सदस्यों में प्रथम पंक्ति के नेता बने। पूर्ण स्वराज्य दल का घोषित उद्देश्य था। आजादी के लिए युवकों को प्रेरित करने वास्ते दिन–रात संगठन को मजबूत करने का काम किया। असहयोग आंदोलन वापस लेने से जो युवा गांधी के खिलाफ निष्क्रीय हो गए थे। उन्हें समझाकर क्रांतिकारी दल में शामिल किया। सशस्त्र क्रांति के रास्ते आजादी की लड़ाई के लिए हथियार खरीदने हेतु हजारों रुपये की आवश्यकता से सरकारी खजाना लूटने की योजना पर अमल किया।

9 अगस्त 1925 को रामप्रसाद बिस्मिल चंद्रशेखर आजाद, अश्फाक उल्ला खां, शचीन्द्र बक्शी, राजेन्द्र लाहिड़ी, के शव चक्रवर्ती, मुरारीलाल, मुकुन्दीलाल बनवारी और मन्मथनाथ गुप्त से काकोरी स्टेशन से आगे ट्रेन रोककर सरकारी खजाना 8600 रुपये लूट लिए। उस डकैती में भाग तो 10 क्रांतिकारियों ने लिया था लेकिन 40 से अधिक क्रांतिकरियों पर झूठे केस दर्ज किए। आजाद सरकार के पूरे प्रयास के बाद भी पकड़ में नहीं आये और सरकार ने पकड़ने के लिए दो हजार रुपये इनाम घोषित किया गया। 17–19 दिसम्बर 1927 को रामप्रसाद बिस्मिल, अश्फाक उल्ला खां, रोशन सिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी दे दी गई। उस घटना से आजाद को बहुत गहरा आघात लगा और दल का भार आजाद के सिर पर आ गया। आजाद की सूझबूझ और परख अनोखी थी। उनका चरित्र बेमिसाल एवं महान था। वे महिलाओं की बहुत इज्जत करते थे। सभी स्त्रियां उन्हें मां. बहन की तरह प्रतीत होती थी। एक सेठ के घर डकैती के समय एक सदस्य परिवार की युवती के साथ अभद्रता कर रहा था। आजाद ने उसे डांटा और बिना पैसा लूट वापस चल पड़े। युवती से माफी मांगी और रास्ते में उस दुश्चरित्र को गोली से उड़ा दिया। आजाद का पूरा जीवन दल के लिए समर्पित था। वे अनुशासन और साहस के बेजोड़ प्रतीक थे। 1927–28 में मरणासन पूंजीवाद गहरे सकंट में फंसा लंबी–लंबी सांसे ले रहा था। आम जनता शोषण के शिकंजे से बाहर निकलने के लिए धरना प्रदर्शन और हड़ताल पर उतारू थी। क्रांतिकारियों ने दलदल में दम तोड़ रही आजादी को बहार निकालने के लिए व्यापक विचार. विमर्श के लिए 8–9 सितंबर 1928 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में एक मीटिंग बुलाई। चर्चा–बहस के बाद समाजवाद को दल का उद्देश्य घोषित किया और दल का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन रखा। बदले हुए इस नाम में किसान–मजदूर व आम जनता की शोषण से मुक्ति और समाजवाद के रास्ते आजादी की राह स्पष्ट दिखाई देती थी। उस मीटिंग में सैन्ट्रल कमेटी का चुनाव सर्वसम्मति से हुआ, जिसमें 1. चंद्रशेखर आजाद 2. सरदार भगत सिंह 3. सुखदेव 4. विजय कुमार सिन्हा 5. शिव वर्मा 6 कुन्दनलाल 7. फणीन्द्र घोष थे।

30 अक्टूबर 1428 क्रांतिकारियों की पहल पर लाहौर में शेरे–ए–पंजाब लाला लाजपतराय ने साईमन कमीशन के खिलाफ जुलूस का नेतृत्व करने पर सहायक पुलिस अधीक्षक सांडर्स ने लाठियों से उन पर पाशविक प्रहार किए। उन प्रहारों की चोट से 17 नवम्बर 1928 को लाला जी की शहादत हो गई। चन्द्रशेखर आजाद ने उस शहादत को देश का अपमान माना और लाहौर पहुंच कर भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा से विचार–विमर्श कर राजगुरु को पूना से लाहौर बुला लिया 17 दिसम्बर 1928 को चन्द्र शेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु और जयगोपाल ने लाहौर में दफ्तर से बाहर निकलते ही सांडर्स को गोलियों से भून कर लाला जी की शहादत का बदला ले लिया। दो पुलिस वाले पकड़ने के लिए पीछे दोड़े। एक सिपाई आजाद की दहाड़ सुनते ही नाली में गिर पड़ा और नाली की दीवार से चिपट गया। हवलदार चनन सिंह आजाद की चेतावनी के बाद भी नही रूका। जिंदगी और मौत की उस दौड़ में तीनों की दूरी बहुत ही कम होती जा रही थी। आगे भगत सिंह बीच में चनन सिंह पीछे राजगुरु। जैसे ही चनन सिंह भगत सिंह को पकड़ने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता है एक गोली चनन सिंह के हाथ को छिलकर निकल गई लेकिन वह फिर भी नही रुका और भगत सिंह का पीछा करता रहा। आजाद ने दूसरी गोली पेट में उतार दी और वह तड़पता हुआ मर गया। थोड़ी सी चूक अपने ही साथी को ढेर कर सकती थी लेकिन आजाद का निशाना ही अचूक होता था। अगले दिन लाला लाजपतराय की शहादत का बदला ले लिया गया। ऐसे पोस्टर सारे लाहौर में चिपका दिए गए। गुप्तचरों का जाल बिछा दिया गया लेकिन चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंहए दुर्गा भाभी और नौकर के वेश में राजगुरु सही सलामत लाहौर से बाहर निकल गए। आजाद हर समय अपने साथ पुस्तकें रखते थे और साथियों को पढ़ने के प्रेरित करते थे। उन्होंने कम्युनिष्ट घोषणा–पत्र दो बार पढ़ा और सबको पढ़ने की सलाह देते थे । महान लेनिन की रचना वामपंथी कम्युनिज्म एक बचकाना मर्ज भी पढ़ी और सरकार पब्लिक सेटी कानून तथा औद्योगिक विवाद कानून लाई। ये ऐसे काले कानून थे जो आम जनता की प्राकृतिक सोच पर प्रहार करते थे तथा मजदूरों को हड़ताल के अधिकार से वंचित करते थे । दल की सैन्ट्रल कमेटी में गहन विचार–विमर्श के बाद उन कानूनों का विरोध करने के लिये असेम्बली में खाली सीटों पर बम फेंककर गिरफ्तारी देने का प्रस्ताव पास किया। बम फेंकने के लिए विजय कुमार सिन्हा और बटुकेश्वरदत के नाम तय हुए।

दूसरे दिन सेंट्रल कमेटी की मीटिंग हुई और सुखदेव ने बम फेंकने के लिए भगत सिंह को भेजना उचित कहा, लेकिन चंद्रशेखर आजाद किसी भी कीमत पर उसम काम के लिए भगत सिंह को भेजना नहीं चाहते थे, क्योंकि साडर्स हत्या मामले में पुलिस को भगत सिंह की तलाश थी। विजय कुमार सन्हिा ओर शिव वर्मा ने भी भगत सिंह को भेजने का विरोध किया। उनका कहना था कि इस काम के लिए भगत सिंह और चंदशेखर आजाद में से किसी को नहीं भेजना चाहिए, क्योंकि संगठन को इन दोनों की आवश्यकता है। भगत सिंह ने कहा 'विधानसभा में बम फेंकने में ही जाऊंगा, केंद्रीय कमेटी को मेरी बात माननी पड़ेगी।ष् चंद्रशेखर ने अपने तर्क रखे और भगत सिंह को समझाने में कसर नहीं छोड़ी, लेकिन भगत सिंह की जिद के सामने न चाहते हुए भी स्वीकृति दी। काले कानूनों का विरोध करने के लिए आठ अप्रैल 1929 को दल्लिी की केंद्रीय असेंबली में भगत सिंह ने सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर बम फेंका, दूसरा बम बटुकेश्वर दत्त ने फेंका। दोनों ने नारे लगाए, इन्कलाब जिंदाबाद, साम्राज्यवाद का नाश हो, दुनिया के मजदूरों एक हो तथा पर्चे भी फेंके और वहीं गिरफ्तारी दे दी। बचने की अपने तरफ से कोई कोशिश भी उन्होंने नहीं की। भगत सिंह ने 6 जून 1929 को एच.एस.आर. के उद्देश्यों पर ऐतिहासिक ब्यान दिया, जिसे पढ़कर आज भी करोड़ों लोग प्रेरित हो रहे हैं। महात्मा गांधी ने अपने साप्ताहिक अखबर यंग इंडिया के जनवरी 1930 के अंक में एक लेख में 'कल्ट ऑफ बम्ब 'लिखकर क्रांतिकारियों की आलोचना की। दल के नेता चंदशेखर आजाद ने गांधी जी लेख का उत्तर लिखने का दायत्वि भगवती चरण वोहरा को सौंपा। भगवती चरण वोहरा ने कल्ट ऑफ बम्ब के उत्तर में फिलोसफी ऑफ द बम्ब लिखकर गांधी जी की सभी दलीलों का उत्तर दिया। चंद्रशेखर आजाद ने इस लेख का छपवाकर 26 जनवरी 1930 को सारे भारत में वितरित करवाया। इस लेख को पढ़कर देश की शिक्षति जनता और युवाओं की आस्था क्रांतिकारी दल के प्रति तेजी से बढ़ी। आजाद किसी भी कीमत पर भगत सिंह को जेल से छुड़ाना चाहते थे। 1930 में वह मोतीलाल नेहरू से मिले और कुछ दिन बाद जवाहर लाल नेहरू और उनकी पत्नी कमला नेहरू से भी आनंद भवन में मिले और भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की जेल से रिहाई पर बात की।

चंद्रशेखर आजाद समझते थे कि भले ही भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को "असेंबली बम्ब केस" में आजीवन सजा हुई है परंतु सांडर्स हत्या केस में भगत सिंह को कुछ अन्य साथियों के साथ फांसी की सजा होगी। इसलिए आजाद ने भगवती चरण वोहरा से मिलकर भगत सिंह को जेल से बलपूर्वक छुड़ाने की योजना बनाई। बम्ब, पस्तिौल और हथियारों से लैस होकर 1 जून 1930 को जेल पर धावा बोल भगत सिंह को मुक्त कराना निश्चित हुआ और भगत सिंह की भी सहमति मिल गई थी। बम परीक्षण में 28 मई 1930 को भगवती चरण वोहरा की शाहदत हो गई। बम यशपाल ने बनाया था। उस दुर्घटना से आजाद को बहुत गहरा दुख हुआ।

भगवती चरण में सुखदेव राज से कहा. "मेरे बचने की उम्मीद नहीं है लेकिन भगत सिंह को जेल से छुड़ाने की योजना ना रोकना आजाद के लिए यह मेरा संदेश है। अंतिम इच्छा थी आजाद के दर्शन पर सांस साथ नहीं दे रहे"।

1 जून 1930 को आजाद वैशम्पायन, धनवंतरी तथा कुछ अन्य क्रांतिकारियों को साथ लेकर धावा बोलने के उद्देश्य से सेंट्रल जेल पहुंचे। अपने–अपने स्थानों पर खड़े आजाद के आदेश का इंतजार कर रहे थे लेकिन ना जाने क्यों भगत सिंह ने आजाद को इशारा नहीं किया तो आजाद निराश हो साथियों सहित भारी मन से वापस लौट आए। बाद में जब भगत सिंह से पूछा कि इशारा क्यों नहीं किया तो उत्तर था– "भगवती चरण की मृत्यु के बाद जीवित रहने की इच्छा नहीं रही थी, मैं नहीं चाहता था कि पार्टी की अंतिम निशानी आजाद भी इस प्रयास में मारे जायें। योजना की असफलता ने आजाद को हिला दिया। 7 अक्टूबर 1930 को फैसले में भगत सिंहए राजगुरु, सुखदेव को फांसी सुनाई गई। आजाद ने हम्मित और साहस से छुड़ाने के प्रयास तेज कर दिए।

27 फरवरी 1931 को आजाद आनंद भवन में जवाहरलाल नेहरू से मिलकर सुखदेव राज के साथ इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क गए। गद्दार वीरभद्र तिवारी को देखकर आजाद चौंक और शीघ्र ही पार्क को पुलिस ने घेर लिया। आजाद ने सुखदेव राज को पार्क से निकाल दिया और तीन पुलिस वालों को मार गिराया। एक गोली आजाद की जांघ में लगी। आजाद ने पेड़ की आड़ लेकर नॉट बावर की कलाई को गोली से उड़ा दिया और विश्वेश्वर का जबड़ा फाड़ दिया। मजदूर किसानों का नेता, नौजवानों का आदर्श, महिलाओं को मां बहनों की इज्जत व सम्मान देने वाला, शोषण मुक्त आजादी की लड़ाई का योद्धा, भगत सिंह व अन्य साथियों को छुड़ाने की इच्छा लेकर गद्दारों की करतूतों से अल्फ्रेड पार्क में लड़ता हुआ अपनी ही अंतिम गोली से 27 फरवरी 1931 को 24 वर्ष की आयु में शहीद हो गया। इतिहास में उस महान क्रांतिकारी ने राष्ट्रप्रेम, साहसए प्यार, बलिदान और देशभक्ति के बेमिसाल आदर्श स्थापित किए।

एसीबी के अधिकारी ने कविता में दिया रिश्वत से दूर रहने का संदेश

–मोहन रत्नू, उपअधीक्षक पुलिस

खोटा रुपया खावतो, जावे सीधो जेल।
मिल जावे रज माजनो, बंश हो बिगडैल।।
खोटा रुपया खावतो, लगे एसीबी लार।
निश्चय जारवे नौकरी, बिगड़ जाय घरबार।।
खोटा रुपया खावतो, चित में पड़े न चैन।
रात दिवस चिन्ता रहे, नींद न आवे नैन।।
खोटा रुपया खावतो, खून ऊपजे खार।
घर कुसंप झगड़ो घणो, पूत जाय परवार।।
नेकी सू कर नौकरी, बहणों उत्तम बार।
नर निरलोभी निडररे, काया लगे न काटा।।
करणा नह हीणा करम, पद परमोशन पाय।
कर रोशन होसी जदे, खरी कमाई खाय।।
मद पीवे मुजरा सुणे, जार जुआंघर जाय।
करमत खोटा कामड़ा, खोटा रुपया खाय।
झोटो ज्यूं लेवे झपट, कपटी नोट कमाय।
पग ज्यांरां बारे पड़े, खोटा रुपया खाय।।
निज परणीने परहरे, परदारा सू प्रीत।
रूल जावे सारी रकम, रिश्वत री आ रीत।।
खरी कमाई खावणी, रहणो ऐक रूझाण।
खरी बात केवे खरी, रतनू "मोहन" राण।।
खोटा रुपया खावतो,, जीव नरक में जाय।
कहे "मोहन" सुण कारमिक, खरी कमाई खाय।।

विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दिखती है, दुनिया उस पर अमल करती है। –विनोबा भावे

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 29/5'7" B. Tech, Civil from PEC Chandigarh. Employed as ETO in Government of Haryana. Preferred Class-I or II Officer of Govt. of Haryana, GOI Haryana Cadre/Zone. Father HCS (Rtd.). Avoid Gotras:Kairon, Damara, Mor. Cont.: 9467222000, 8360106972
- SM4 Jat Girl (DOB 23.08.91) 28.11/5'4" B. Tech, (Electric & Communication). Avoid Gotras:Pawaria, Ahlawat, Nandal. Cont.: 9996060345
- SM4 Jat Girl (DOB 31.05.87) 33/5'5" M.A. B.Ed, M.Ed. ETT, JBT. Employed as JBT Teacher in Punjab Govt. School. Father retired from PGI Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras:Dabas, Dalal, Dhankar. Cont.: 9878353500, 9646963113
- SM4 Jat Girl (DOB 03.12.95) 24/5'5" B.A. Father retired from PGI Chandigarh. Mother housewife. Avoid Gotras:Dabas, Dalal, Dhankar. Cont.: 9878353500, 9646963113
- SM4 Divorced issueless Jat Girl (DOB 12.05.88) 32/5'2" B.Sc. (MLT), M.Sc (Microbiology) from Punjab Technical University Jalandhar. Working as Lab Incharge in reputed Paras Hospital Sector 22, Panchkula. Father in Government job at Panchkula. Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya. Cont.: 8146082832
- SM4 Jat Girl (DOB 03.09.90) 29.10/5'2" B.C.A., B.Ed. MSc. Employed as private school teacher in Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras:Nandal, Lamba, Gahlayan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Girl (DOB 23.11.91) 28/5'3" MSc. Physics from Kurukshetra University, B.Ed. Employed in State Bank of India as Trainee Officer/Probationary Officer on regular basis at Kaithal. Father retired from Mandi Board. Wanted educated match working in Govt. Sector, Banking or MNC Co. Avoid Gotras:Sangroha, Nain, Kaliraman. Cont.: 9466569366
- SM4 Jat Girl (DOB 29.09.90) 29/5'6" B.Tech (I.T), M.A. (English) from Punjab University Chandigarh. NET qualified. Preparing for PhD in English. Presently doing part time job at India-Canada Elante Offices at Chandigarh as Invigilator/Technician for CELPIP exam. Avoid Gotras:Nain, Chahal, Rathi, Shaharan. Cont.: 9463087328
- SM4 Jat Girl Divorcee (DOB 23.07.88) 31.11/5'3" BDS Own practice. Father VRS from Revenue Department & own business. Mother housewife. Avoid Gotras:Chahar, Nain, Binda. Cont.: 7347378494, 9414465295
- SM4 Jat Girl (DOB 04.01.92) 28/5'4" M.S.c Physics, B.Ed, CTET passed. Employed as Teacher in Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Kundu, Siwach. Cont.: 8360227580, 9888396275
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 28/5'5" B.A. LLB (Hons.) LLM, Pursuing PhD from MDU Rohtak. Advocate in Punjab & Haryana High Court. No dowry seeker. Preferred match from Chandigarh, Panchkula, Mohali. Own flat at Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 9417333298
- SM4 manglik Jat Girl 26/5'2" M.A. Sociology from Punjab University. Avoid Gotras: Beniwal, Sejwal, Kadian, Kaliraman. Cont.: 7657871394
- SM4 Jat Girl (DOB 20.03.93) 27/5'6" B. Com, M.Com, B.Ed. UGC, NET qualified. Employed as Assistant Professor at CGC. Avoid Gotras: Dalal, Kadian, Dahiya. Cont.: 6283618150
- SM4 Jat Girl (DOB 02.12.91) 28/5'2" Convent Educated. B.E. (Civil Engineering), Gold Medalist P.U. M.Tech. & Phd Transportation Engineering from IIT Delhi. Father AGM, Mother Lecturer. Brother B.Tech. Civil PEC Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Mor, Sandhu. Cont.: 9996545234
- SM4 Jat Girl 26/5'5" M.Com., UGC, NET Employed as Assistant Professor. Preferred match in Govt. job. Avoid Gotras: Kadian, Nehra, Sangwan. Cont.: 9569156984
- SM4 Jat Girl (DOB September. 93) 26/5'4" B.A., B.Ed. Employed as Lecturer in Political Science in Delhi Govt. Avoid Gotras: Panghal, Dhanda, Sheoran. Cont.: 7009457235
- SM4 Jat Girl (DOB 02.09.88) 31/5'5" B.Tech. ECE from KUK. Pursuing PGDMM (NMIMS). Working experience in teaching. Worked in Jindal Industry Hisar. Father retired Executive officer from MC. Rohtak. Avoid Gotras: Sangwan, Hooda, Sehray. Cont.: 9050656227
- SM4 Jat Girl (DOB 29.02.92) 28/5'4" M.Sc. Physics, B.Ed, PTET, Employed as Teacher in private school, Chandigarh. Avoid Gotras: Dalal, Dagar, Singhmar. Cont.: 9463330394
- SM4 Jat Girl 26/5'8" M.A. English. Stenography in both English & Hindi. Employed as Junior Scale Stenographer in Irrigation Department Haryana at Headquarters Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Sangwan, Dahiya. Cont.: 9217884178
- SM4 Jat Girl (DOB 25.10.92) 27/5'5" B.Tech (Electronic & Communication). Avoid Gotras: Dhayal, Punia, Phogat. Cont.: 9416270513
- SM4 Jat Girl (DOB 16.10.94) 25/5'4 " B.Tech (ECE) from KUK, Pursuing MBA regular . Father Headmaster, Mother Govt. teacher. Avoid Gotras: Narwal, Kadian, Ranjha. Cont.: 9416821023
- SM4 Jat Girl (DOB 24.06.93) 26/5'3 " M.Sc, MCA., GIS, B.Ed. Math, English. Employed as PGT Geography. Avoid Gotras: Joon, Khatkar, Rathi. Cont.: 9050001939
- SM4 Jat Girl (DOB 28.06.92) 27/5'5 " BCA, MCA, HTET. Employed as Programmer in Panchayat Department. Avoid Gotras: Redhu, Deswal, Sandhu. Cont.: 9728108634, 9991866084
- SM4 Jat Girl (DOB 25.04.93) 26/5'4" MSc. Nursing. Employed as Lecturer in Swami Devidayal Nursing College Barwala. Avoid Gotras: Pilania, Malik, Singrowa. Cont.: 9896813684
- SM4 Jat Girl (DOB 04.06.91) 28/5'4" B.Sc., MSc, PhD. from DTU. Employed in P.U. as Guest faculty. Preferred Govt. job of Education and Defence line. Avoid Gotras: Khatri, Punia, Chhikara. Cont.: 8802251151
- SM4 Jat Girl (DOB 22.12.96) 24/5'6" B.A., B.Ed., JBT (Regular). Avoid Gotras: Lohan, Punia , Goyat. Cont.: 9465875228
- SM4 Jat Girl (DOB 04.12.90) 30/5'2" MCA. Working in MNC, Mohali. Avoid Gotras: Gulia, Malhan, Dalal. Cont.: 9780385939
- SM4 Jat Boy (DOB 30.06.92) 28/6 feet B.Tech. Employed in a reputed Company at Mohali with Rs. 4 lakh package PA. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Sindhu, Tehlan, Dhanda. Cont.: 9872716234, 9417345494
- SM4 Jat Boy (DOB 05.03.88) 32/6 feet B.C.A., MBA, Oracle Course from Pune. Employed as Assistant Consultant in Capgemini Technology Services India Pvt. Ltd. with salary Rs. 50000/- per month. Father advocate. Preferred match in job. Avoid Gotras: Singhal, Sidhu. Cont.: 9013477708, 9810432497
- SM4 Jat Boy (DOB 22.08.87) 33/5'8" M.A. (Political Science) from MDU Rohtak. Pursuing PhD from MDU. Employed as Assistant Professor on Cont. basis in Bhagat Phool Singh University Khanpur

with Rs. 7.50 lakh salary PA. Father ETO retired. Preferred MA, M.Sc, BA/BSc girl. Avoid Gotras: Dahiya, Siroha. Cont.: 9810493883

- SM4 Jat Boy (DOB16. 04.95) 25/5'7" 10+2, Non-Medical, Graduation, M.A. 1st year, HARTRON Diploma. Avoid Gotras: Malik, Dalal, Ghanghas. Cont.: 9888991799
- SM4 Jat Boy (DOB 26.09.91)28/5'8" B.A. LLB Advocate in Punjab & Haryana High Court. Pursuing judiciary. Only son. Three houses at Chandigarh, Panchkula, three acre land in village, three shops and three plots. Rental income Rs. 35000/-. Avoid Gotras: Poonia, Nain, Sihag. Cont.: 9316131495, 7973059762
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.92) 27/5'9" B.Tech. (Mechanical) from Kurukshetra University. Employed as Senior Production Engineer in Stylam Industries Pvt. Ltd. at Raipur Rani (Panchkula). Father in govt. job at Panchkula. One flat at Dhakoli, 3 acre land, one residential house, two plots and 1 Service Station at Village Badauli (Panipat). Avoid Gotras: Mittan, Kharb, Dahiya. Cont.: 8146082832
- SM4 Jat Boy (DOB15.12.91) 28/5'8" B.Tech. (Civil). Employed as regular J.E. in Town & Country Planning Haryana at Panchkula. Family settled in Panchkula. Avoid Gotras: Dabas, Punia, Barak. Cont.: 9466240260, 9417880207
- SM4 Jat Boy (DOB18.09.88) 31/5'11" B. Com. C.A. Own Practice as C.A. Avoid Gotras: Mann, Balhara, Hooda. Cont.: 9646880418.
- SM4 Jat Boy (DOB19.08.94) 25/5'8" B. Tech. from Kurukshetra University. Avoid Gotras: Gulia, Ghanghas, Sandhu. Cont.: 9467762881, 7015124529.
- SM4 Jat Boy 26.6/5'7" B.Com. Employed as A.S.I. in Central Govt. (C.I.S.F). Father Haryana Govt. Employee, Mother housewife. Brother in MNC at Gurugram. Avoid Gotras: Kharb, Rathee, Jatrana. Cont.: 8708981317
- SM4 Jat Boy (DOB 24.08.90) 29/5'10" B.A. from Punjab University. Master in Mass Communication from Chitkara University. Working as Line Producer in reputed Sikhya Entertainment Co. at Bombay. Earning 10-12 lakh P.A. Father retired from Bank. Mother housewife. Family settled at Chandigarh. Three acre land at Village. Avoid Gotras: Rathee, Ahlawat, Khatri. Cont.: 9417377302.
- SM4 Jat Boy (DOB13.01.91) 29/5'8" MBA, Employed as P.O. in Bank of Baroda. Avoid Gotras: Narwal, Mann, Duhan. Cont.: 9417579758
- SM4 Jat Boy (DOB18.09.88) 31/6' B.Com, C.A. Doing practice as C.A. Father retired S.I. Chandigarh. Family settled in Chandigarh. Preferred qualified C.A. girl. Avoid Gotras: Mann, Bhalra, Hooda. Cont.: 9417213500
- SM4 Jat Boy (DOB 20.12.90) 29/5'10" B.Tech. Civil. Employed as clerk in Haryana Government. Avoid Gotras: Panghal, Dhanda, Sheoran. Cont.: 7009457235
- SM4 Jat Boy (DOB 08.09.86) 33/6' B.Tech. Employed as Technical Archited Company, Nokia, Bangaluru with Rs. 21-22 lakh package PA. Required tall, beautiful girl. Avoid Gotras: Chhikara, Rathi, Dahiya. Cont.: 9416234193, 7888463740, 9416935291
- SM4 Jat Boy (DOB 04.10.88) 31 PhD (Management) Job & Permanent Resident (PR) of Canada from 7/2019. (Now for short visit in India) Former two times class-I officer in India. Father class-I officer retired from Haryana Govt. Avoid Gotras: Malik, Jhanjharia, Hooda. Cont.: 9876155702
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90) 29/6'1" B. Tech. Employed as Inspector in CBI. Preferred highly qualified girl with at least 5'4" height. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal, Mor. Cont.: 9023492179
- SM4 Jat Boy (DOB July, 91) 28/5'11" B.Tech., M.Tech. in Civil Engineering. Working in MNC Gurgaon. Avoid Gotras: Rathi, Gahlan. Cont.: 9815094054
- SM4 Jat Boy (DOB Feb. 89) 31/5'11" MBBS, Doing MD. Avoid Gotras: Sangwan, Dhatarwal, Legha. Cont.: 8058980773
- SM4 Jat Boy (DOB19.02.90) 30/5'11" B.A. LLB. Avoid Gotras: Loura, Bharman, Sindhu, Deswal, Duhan. Cont.: 9463653724
- SM4 Jat Boy (DOB 01.04.84) 35/5'8" B.A. Avoid Gotras: Loura, Bharman, Sindhu, Deswal, Duhan. Cont.: 9463653724
- SM4 Jat Boy 27/5'11" M.A. Economics, JBT, Employed as regular JBT Teacher in Delhi Govt. School. Avoid Gotras: Bhaker, Punia, Kaswan. Cont.: 6239019166, 9780260305
- SM4 Jat Boy (DOB15.03.91) 28/5'9" B.Tech. Computer Science, MBA. Working in Software Development Programming since 2012. Now working in MNC Co. as Team Lead Manager with package 30 lakh annual and total family income 50 lakh PA. Preferred working and highly qualified & urban living small family or own house in nearby Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Bheru, Mor. Cont.: 9896618617, 9996606868
- SM4 Jat Boy 31/6'3" B.Tech. Computer Science. Working in HCL NOIDA with package 23 lakh PA. Mother lecturer (Rtd.), Three sisters well settled. Well educated family, house in Jind & Gurgaon. Preferred MNC working tall girl. Avoid Gotras: Redhu, Malik. Cont.: 8447665851
- SM4 Jat Boy 26/6'1" Polytechnic Electrical Diploma. Working in MNC with package 4 lakh PA. Mother teacher (Rtd.). Brother, sister well settled. Agriculture land in village and residing in city. Preferred tall girl & in service. Avoid Gotras: Mor, Malik, Budhwar. Cont.: 8295865543
- SM4 Jat Boy (DOB15.05.89) 30/5'11" B.Tech (E &C), MA Geography, Doing PhD. as JRF. Father Assistant Commissioner CGST, Mother Assistant Professor. Preferred tall beautiful JRF/ NET qualified girl. Avoid Gotras: Ahlawat, Mann, Sangwan. Cont.: 9896190998.
- SM4 Jat Boy 31/5'6" Four year degree of Hotel Management from Abroad (Europe). Working in private IT Company. Father Govt. retired class-I officer. Own triple storey house at Zirakpur. Six acre agriculture land in village. Avoid Gotras: Nehra, Ghanghas, Dalal. Cont.: 9814312226
- SM4 Jat Boy 32/5'10" B.Tech, MBA, CFA, Employed in MNC at Banglore with 38 lakh package PA. Preferred MBA girl. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat. Cont.: 8360609162
- SM4 Jat Boy (DOB 15.05.89) 30/5'11" B.Tech. (E&C), MA Geography, doing PhD. as JRF. Father Assistant Commissioner CGST, Mother Associate Professor. Required tall, beautiful & fair, JRF/NET qualified girl. Avoid Gotras: Ahlawat, Mann, Sangwan. Cont.: 9896190998
- SM4 Jat Boy (DOB 22.04.87) 32/5'7" B.Tech. in Electrical & Communications. Employed in MNC. Delhi. Avoid Gotras: Sangroha, Nain, Kaliraman. Cont.: 9466569366, 7015021974
- SM4 Jat Boy (DOB 22.04.91) 28/5'8" B.Tech. in Computer Science. Self company in Gurugram. Govt Job Haryana, Panchkula. Avoid Gotras: Kadyan, Ahlawat, Dogar. Cont.: 9876855880
- SM4 Jat Boy (DOB 05.10.89) 31/5'8" +2 Autocad Sanitary Inspector. Self Business. Avoid Gotras: Dhayia, Raman. Cont.: 7206038345.

सार्वजनिक अपील

जैसा कि आप सभी को मालूम है कि समस्त विश्व कोरोना वायरस की महामारी के संकट के दौर से गुजर रहा है, जिसने आमजन के स्वास्थ्य के साथ-साथ राष्ट्र की वित्तीय व्यवस्था को भी डांवाडोल कर दिया है। हरियाणा भी इस महामारी से अछूता नहीं हैं, दिन-प्रतिदिन कोरोना से संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। यह जानलेवा बीमारी लम्बे समय तक चल सकती है।

देश एवं प्रदेश में विकट हालातों के मध्यनजर जाट सभा द्वारा अपने दोनों भवनों :- सैक्टर-27, चण्डीगढ़ जाट भवन तथा सैक्टर-6, पंचकूला में स्थित सर छोटूराम भवन तथा चौधरी छोटूराम सेवा सदन कटरा-जम्मू के 10 कनाल के प्लॉट को कोरोना से संक्रमित मरीजों के ईलाज के लिए संबंधित प्रशासन/सरकारों को सौंप दिया गया है। पंचकूला स्थित सर छोटूराम भवन तो स्वास्थ्य विभाग पंचकूला के उन डाक्टरों की टीम को रहने के लिए दिया गया है जो कोरोना से संक्रमित मरीजों को ईलाज करने में सेवारत है।

जाट सभा पंचकूला/चण्डीगढ़ हमेशा ही समाजसेवा के कार्यों में अग्रणी रहती है। वर्तमान कोरोना की महामारी के संकट को देखते हुए जाट सभा ने पीड़ितों की सहायता के लिए **'हरियाणा कोरोना रिलिफ फंड'** में **1 लाख 11 हजार रुपये** की राशि अनुदान में दी है, यह प्रयास सभी के सहयोग से आगे भी जारी रहेगा। जाट सभा पंचकूला/चण्डीगढ़ के पास इस प्रकार की आपदाओं या महामारी के लिए अपना कोई स्थाई कोष नहीं है और ऐसी परिस्थितियों में आप सभी दानी सज्जनों के सहयोग से वित्तीय अनुदान का प्रबंध किया जाता है।

इसलिए आप सभी से नम्र निवेदन है कि राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक आपदा की इस घड़ी में सार्वजनिक हित को देखते हुए अपनी इच्छा अनुसार भरपूर आर्थिक सहयोग एवं हर संभव सहायता प्रदान करें। इसके साथ ही इस भयंकर बीमारी से बचाव हेतू सरकार द्वारा घोषित कर्फ्यू/लॉकडाऊन व इस संदर्भ में जारी सरकारी दिशा-निर्देशों का पालन करें।

जाट सभा को दी जाने वाली अनुदान राशि 'जाट सभा चण्डीगढ़' के पक्ष में चैक/डिमांड ड्राफ्ट की मार्फत जाट भवन, 2 बी, सैक्टर-27ए, मध्य मार्ग चण्डीगढ़-160019 में भेजी जा सकती है। इसके अलावा, धनराशि एनएफटी/आरटीजीएस द्वारा जाट सभा चण्डीगढ़ के बचत खाता नम्बर-5010023714552, आईएफएससी कोड - एचडीएफसी 0001321 में सीधे ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा-80 सी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

TO WHOM WE HAVE PROUD

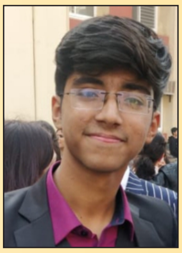

Mr. Vivaan Gill grandson of Sh. B.S. Gill, Secretary of Jat Sabha Chandigarh/ Panchkula and son of Sh. Ravinder Singh Gill on his excellent performancce in 12th CBSE examination board. He secured 94% marks in Delhi Public School, Indirapuram.

Jat Sabha Chandigarh/ Panchkula congratulations him and his family on his excellent achievement.

Miss Priyanka Kairon D/o Sh. D.R. Kairon, HCS(R), R/o C3/44FF,DLF Valley, Panchkula has been selected/ appointed as E.T.O. (HCS Allied Services Hr.) on First attempt.She appeared 3 times in UPSC Exams.,appeared in Interview for the post of Assistant Commissioner, Provident Funds, cleared PCS Exams.2 times, worked as Inspector, Central Excise & Customs about 4 years. Studied 10+2 from Sacred Heart School, Chd. & B.Tech from PEC, Chd.

We convey heartiest congratulations for her success & bright future.

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172–2654932, 2641127**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

Postal Registration No. CHD/0107/2018-2020 **RNI No. CHABIL/2000/3469**

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज, चंडीगढ़, फोन : 0172-2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।